देश दर्शन

काश्मीर



काश्मीर

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—स्थिति और विस्तार

२—संक्षिप्त इतिहास

३—काश्मीर के घाट

४—श्रीनगर के उद्यान

५—काश्मीर जाने का मार्ग

६—काश्मीर की अद्भुत वस्तुयें

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

जुलाई १९४१] # देश-दर्शन [श्रावण १९९८

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] [संख्या १

काश्मीर

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This Copy As -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)।
इस प्रति का ।=)।

विषय-सूची

काश्मीर-दर्शन

स्थिति और विस्तार

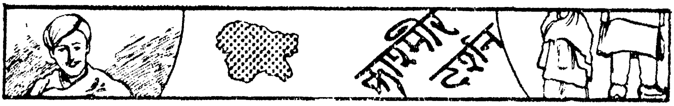
जम्मू और काश्मीर को अक्सर काश्मीर राज्य के नाम से पुकारते हैं। यह राज्य ३२·१७° उत्तरी अक्षांश से ३६·५८° उत्तरी अक्षांश तक और ७३·२६° पूर्वी देशान्तर से ८०·३०° पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। इस राज्य के चार भाग हैं। १—जम्मू, २—काश्मीर, ३—लद्दाख (लघु तिब्बत्) और ४—गिलगिट। काश्मीर के उत्तर में यारक़न्द और पामीर, दक्षिण की ओर पञ्जाब, पूर्व में चीनी तिब्बत और पश्चिम की ओर यागिस्तान है। काश्मीर की अधिक से अधिक लम्बाई ४०० मील, चौड़ाई ३०० मील और क्षेत्रफल ८४,४३२ वर्गमील है। राज्य का अधिकांश भाग पहाड़ी है।

देश दर्शन

प्राकृतिक विभाग, पर्वत तथा मार्ग

काश्मीर तीन प्राकृतिक भागों में बँटा है। एक भाग पीर पञ्जाल श्रेणी के दक्षिण दूसरा भाग पीर पञ्जाल और उस श्रेणी के मध्य में स्थित है जो काश्मीर को लद्दाख और अस्तोर से अलग करती है और तीसरा भाग कराकोरम पर्वत के दक्षिण की ओर स्थित है।

पीरपञ्जाल पर्वत भारतवर्ष के मैदान को काश्मीर से अलग करते हैं। यह पर्वतीय श्रेणी दक्षिण-पूर्व की ओर चनाब नदी से आरम्भ होती है और उत्तर-पश्चिम में झेलम नदी के तट पर समाप्त होती है। किश्तवार से मुजफ्फराबाद तक इस श्रेणी की लम्बाई १२० मील है। इस श्रेणी के तीन मुख्य भाग हैं जो एक दूसरे के समानान्तर हैं। दक्षिण की ओर पहाड़ी का बाहरी भाग है जहां पर जम्मू नगर वसा है। आरम्भ में यह पर्वतीय श्रेणियां मैदान से १०० से २०० फुट तक ऊँची हैं। उत्तर की ओर पर्वत बहुत ऊँचे हैं। इनकी श्रेणियां साल के अधिकांश भाग तक बरफ से ढकी रहती हैं।



मुख्य श्रेणियां निम्नलिखित हैं :—

१—बानाहाल (६,२०० फुट) वेरीनाग के ऊपर पर्वतीय श्रेणी के दक्षिणी पूर्वी सिरे पर है।

२—कौंसरानी कुठार या विष्णुपाद (१५,५२३ फुट) यह तीन हिमानी चोटियां बानाहाल के पश्चिम में हैं। यह चोटियां लम्बाकार हैं और ब्रह्म चोटियों के नाम से प्रसिद्ध हैं।

३—रायन्यूर १५,५२३ फुट अहरबल झरने के पश्चिम की ओर देवसर परगना में है।

४—रूपी १३,००० फुट शुपयान और रानौरी के मध्य में हैं।

५—बारहाल १३००० फुट शुपयान और रानौरी के मध्य में है।

६—पीर पञ्जाल ११०२० फुट :—हीरापुर के ऊपर दारा हाल के उत्तर की ओर है।

७—टाटाकुटी १५,५२४ फुट है यह सब से ऊँची चोटी है और जब आस्मान साफ होता है तब लाहोर से दिखाई पड़ती है।

८—काजी नाग या काली नाग १५,५२४ फुट ऊँची चोटी उत्तर मछीपुरा में है।

९—अफर्वत १४,५०० फुट ऊँची चोटी गुलमर्ग के ऊपर है।

१०—शुपीकुर, काचगुल और अनवत चोटियाँ लगभग ११ हज़ार फुट ऊँची पीर पंजाल के उत्तरी ढाल पर हैं।

इन पर्वतों के अन्दर अधिक ऊँचाई पर कई झीलें हैं। कौसर नाग विष्णुपाद में, नन्दनसर और चन्दनसर दारहाल के समीप, अनवत नाग और रामसर काचगुल और अनवत में, दूदसर काचगुल में, वतसर शुपकुरी में, क्षुहारसर और इन्द्रसर जाजीमर्ग में, दमामसर ऐलपतर अफर्वत में, कासिन नाग और सतगोलनाग बंगस में, काजीनाग या काली नाग, घुरचन नाग नीलपुशनाग और वाँगनवास काजी नाग में हैं।

नीचे लिखी नदियाँ भी उपरोक्त पर्वतों से निकलती हैं और दक्षिण की ओर प्रवाह करती हैं।

रावी, अज, तावी, चनाब, तावी-मनावर, पञ्चनदी।



इन पहाड़ियों के उत्तरी भाग में सुन्दर बन हैं परन्तु दक्षिणी भाग बंजर है। उत्तर की ओर यह पहाड़ियाँ काश्मीर की घाटी से दीवार की भांति उठती हैं परन्तु दक्षिण की ओर क्रमशः यह श्रेणियां नीचे होती जाती है। दक्षिण की ओर निचली पहाड़ियों से बना भाग मध्यवर्ती पहाड़ियों के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें किश्तवार, भद्रवाह, बसोहली, रामनगर, ऊधमपुर, रिआसी, राजौरी, कोटली और पञ्च आदि स्थान स्थित हैं।

काश्मीर की घाटी और लद्दाख (लघु तिब्बत) के मध्य निम्नलिखित श्रेणियाँ हैं।

नंगा पर्वत या देवसर, नस्तछेनू, त्रागबल, बुर्ज़बाल, डोरीकुन, हरमुख, ज़ोजीबाल, महादेव, ननकुन, लिदरवत, कोला होय, अमसाथ, कोहन्हार, गाशब्रार, हर भगवान, मरगन, मरबल, हुखसर, ब्रारीबल।

यह श्रेणियां हिमालय प्रधान श्रेणी के भाग हैं। यह चनाब और झेलम की घाटियों को सिंध नदी की घाटी से अलग करती हैं। इस भाग में बहुत कम दर्रे अथवा घाट हैं। सब से निचला घाट ज़ोज़िला का है।

पूर्व की ओर भोट कोट और पश्चिम की ओर गुरेस और अस्तोर के मध्य बुरज़ील और डोरीकून दर्रे हैं।

इन पर्वतों से संद्रेन, ब्रिङ्गी, अरापी, लम्बूदारी, अरयल, क्षुन्तीकुल, सिंध, अरिन, मदमती, पोहरू आदि नदियां निकल कर काश्मीर की घाटी की ओर बहती हैं। जिन पर्वतों से यह नदियां निकलती हैं उनके अन्दर नीचे लिखी झीलें अधिक ऊँचाई पर स्थित हैं।

शिशरामनाग और ज़ामतरी नाग की झीलें कोहन्हार के उत्तर महागुनस पहाड़ी के समीप हैं।

हतीआर तलाव ससकृत पर्वत के ऊपर १४,६५० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। केम्सर झील एम्बेर घाट के ठीक नीचे बाईं ओर है जो पहलगाम से २१ मील की दूरी पर है। तारसर और मारसर झीलें एक ऊँचे पर्वत द्वारा अलग हो जाती हैं। तारसर का पानी लिदरवत की ओर बहता है और लिदार नदी में गिरता है और मारसर नदी का पानी दाक्षीगाय घाटी की ओर बहता है और वहाँ से श्रीनगर को पीने का पानी जाता है। महादेव पर्वत-श्रेणी में चन्द्रसर झील है। ब्रह्मसार, नन्दकोल, गंगाबल, कोलसर, खैरासर,

दूधसर, गगसर, कानसर, दोथसर, सतसर, नीलसर, नीलभवन, तलावबल, सालनसर, यमलसर आदि झीलें हरमुख पर्वतीय श्रेणी में हैं।

अधिक दक्षिण की ओर कृष्ण गंगा नदी के उद्गम वाले कृष्णसर, विष्णुसर, प्रंगसर, गाधसर, सतनीसर, सारनसर, कोदूरीसर, सतगुलनाग आदि सरोवर हैं। कृष्ण गंगा दुमेल स्थान पर झेलम नदी से मिलती है।

अधिक पूर्व की ओर वर्तन नदी सरबल, ~~खिलननाग~~ सोनसर, कुलसर आदि सरोवरों से निकलती है।

जास्कर के उत्तर सूरू द्रास शिङ्गों और अस्तूर और नदियाँ हैं। यह नदियाँ सिंध नदी की सहायक हैं।

कराकोरम एक बड़ा ही ऊँचा पर्वत है। यह काश्मीर राज्य की उत्तरी सीमा बनाता है। पूर्व की ओर करा-कोरम तिब्बत के उत्तर फैला है। पश्चिम की ओर यह हिन्दूकुश बदखशां को अफगानिस्तान से अलग करता है। तिब्बत के उत्तर की ओर वाले पर्वतों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान प्राप्त नहीं हैं परन्तु लद्दाख और यारकन्द के मध्य कई पर्वतीय घाट (दर्रे) हैं। यह घाट (दर्रे) बड़े ऊँचे हैं। यह संसार के सब से ऊँचे कारवाँ मार्ग हैं।

यह घाट समुद्र के धरातल से १८ या २० हजार फुट ऊँचे हैं। इन्हीं पर्वतों में के नामक चोटी २८२७८ फुट ऊँची है और संसार की दूसरी सब से ऊँची पर्वतीय शिखा है। इसमें होकर दो प्रधान मार्ग चँगचेनमो और शायक घाटी होकर हैं। यह मार्ग लेह से खोतन तथा यारकन्द को जाते हैं। अधिक पश्चिम-दक्षिण की ओर दुञा और गिल्गिट के मध्य तथा उत्तर की ओर पामीर और बदखशां के मध्य बहुत से पर्वतीय घाट हैं। इन पर्वतों में हरमुख (२८२८५ फुट) गिल्गिट में और रकीपूर्ण शिखा (२५५५० फुट) दुञा पर्वत में है। इन्हीं पर्वतों से सिन्ध नदी अपनी शायक, नौब्रेरा, शिगार और गिल्गिट नदियां शाखाओं के साथ निकलती हैं।

जलविभाजक भूमि (वाटर शेड) क्यूनलून और कराकोरम कुराकाश और यारकन्द को उन नदियों को अलग करते हैं जो तुर्किस्तान और सीमावर्ती जिलों में प्रवाह करती हैं। स्वात मासिन पर्वत सिंध और काबुल नदी को अलग करते हैं। गूनकुन पर्वत जो स्पिती, लाहौल, जांस्कार अमरनाथ और बुरजीला तक फैला

है। वह जम्मू और काश्मीर की नदियों का लद्दाख की नदियों से अलग करता है।

हरमुख, त्रागबल और क़ाजीनाग पर्वत झेलम और कृष्ण गङ्गा नदियों के पानी को अलग करते हैं।

कपलास और शिव जी पर्वत चम्ब पर्वत से मिलकर चनाव और रावी नदियों के पानी को अलग करते हैं।

बानाहाल और पीर पञ्जाल पर्वतीय श्रेणियां झेलम और चनाब नदियों के पानी को अलग करते हैं।

पर्वतीय घाट बानाहाल, मुहु गुलाबगढ़, कोन्सरनाग और बूदल के दर्रे जम्मू और काश्मीर के मध्य में स्थित हैं। पीर पञ्जाल, फीरोज़पुर, दारादाल, तोसा मैदान, हाजी-पीर के घाट काश्मीर, पञ्ज और भीमबेर के मध्य स्थित है। मुस्ताग या कराकोरम का दर्रा लद्दाख और तुर्किस्तान के बीच में है। राजदानियानगन काश्मीर और गूरेस के मध्य में है। बुरजील काश्मीर और किश्तवार के बोच में है। भोतकोर और पनीला के घाट किश्तवार और कारगिल के मध्य में हैं। नीर, संगी, रंगल और अमासी बरदार के घाट लद्दाख और जँस्कार के मध्य में स्थित हैं।

बरालचा, लचुलंग और संकोला के घाट लद्दाख और पंजाब के मध्य स्थित हैं।

पीर पञ्जाल के दक्षिण के मैदानों की ऊँचाई एक हजार से दो हजार फुट तक है। इन जिलों के कई एक भाग बहुत उपजाऊ हैं। जिनमें काथुवा, जम्मू, उधमपुर (चनाब के पूर्व) रियासी मीरपुर (झेलम और चनाब के मध्य) आदि जिले उल्लेखनीय हैं।

पर्वतों के मध्य पञ्च, राजौरी और अपर चनाब की घाटी में रामबाण और भद्रवाह आदि घाटियां बड़ी उपजाऊ हैं। वहां पर बस्ती भी बड़ी घनी है।

इन घाटियों की उपज भूमि की ऊँचाई के ध्यान से भिन्न है। २००० फुट की ऊँचाई के नीचे ईख तथा केले आदि की ऊपज होती है। नाज की उपज भी होती है। रूई की उपज भी अच्छी होती है। पहाड़ियों के नीचे मक्का, गेहूँ और जौ की अच्छी खेती होती है। चीर और देवदार के बन भी बहुत हैं जिससे राज्य को अच्छी आय है। उत्तरी ढालों पर बनों में भांति भांति के वृक्ष पाये जाते हैं। उन वृक्षों में काश्मीर के भांति भांति के पक्षी वास करते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

काश्मीर एक सुन्दर देश है। यहां की जलवायु बड़ी सुन्दर है तथा विशाल पर्वत हैं। अनुपम झीलें तथा नदियों का दृश्य आलौकिक हैं। वहां की भूमि खेती के लिये बड़ी उपजाऊ है। वहाँ पर इतने सुन्दर पुष्प तथा फल उत्पन्न होते हैं कि उन्हें देख कर मनुष्य यकायक यही कह बैठता है कि काश्मीर की कहानी देवगणों तथा देवियों की कहानी है। काश्मीर भारत की स्वर्ग भूमि कहलाता है।

काश्मीर के प्राचीन इतिहास का पता वहां के किस्से कहानियों से चलता है। संस्कृत में राजतरंगिणी नामक पुस्तक कल्हन ने बारहवीं सदी में लिखी थी। इस पुस्तक में काश्मीर के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डाला गया है और इसी पुस्तक से हमें वहां के प्राचीन इतिहास का पता चलता है।

राजतरंगिणी में काश्मीर देश के बनाये जाने का इतिहास भी लिखा है। काश्मीर देश किसी समय में एक बड़ी झील था। परन्तु ईश्वरीय शक्ति के कारण विशाल झील का पानी शुष्क हो गया और वहां पर भूमि की उत्पत्ति हो गई। जब विशाल झील

वर्तमान थी तो उसके चारों ओर बड़े विशाल पर्वत थे। उन पर्वतों से बच कर जाना असम्भव था। हरमुख पर्वत के ऊपर श्री पार्वती देवी का निवास स्थान था। पार्वती ऊलर झील में अपनी नौका के ऊपर चढ़ कर जल क्रीड़ा किया करती थी। पार्वती जी बड़ी सुशील तथा उदार थी। उसी झील के अन्दर एक बड़ा सांप निवास करता था। उस बड़े सर्प के कारण झील के के अन्दर तूफान आया करते थे जिससे नौका चलाने वालों को बड़ा कष्ट होता था। वहां पर बहुत समय तक देव गणों तथा राक्षसों में युद्ध होता रहा। अन्त में शिव भगवान ने उस देश का भ्रमण किया। शिव भगवान ने लाखों वर्ष तपस्या की और योग साधन में अपने समय को व्यतीत किया। शिव भगवान ने तपस्या करने के पश्चात् विशाल राक्षस (सर्प) को मारने की शक्ति प्राप्त की।

ब्रह्मा के पौत्र के साथ राक्षस खुलेतौर पर युद्ध नहीं करना चाहता था। इसलिये वह झील के अन्दर जल में छिप गया। तब देवगण सहायता के लिये गये और बारामूला (वराहमूल) पर्वत पर आक्रमण किया उसे

तोड़ कर उन्होंने झील के पानी को बाहर निकाला। बर्तमान कंदराएँ तथा संकरी झीलें आज उसी की साक्षी हैं। फिर भी वह विशाल सांप घाटी के बचे हुये पानी में छिपा रहा। उसके बाद सूर्य तथा चन्द्रमा की सहायता से देवताओं ने उस राक्षस का पता लगाया।

पार्वती जी ने अपने पर्वत के ऊपर से एक छोटा पर्वत उस राक्षस के ऊपर फेंक दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। वह पर्वत अब तक बर्तमान है और उसी के ऊपर हरि-पर्वत का किला बना हुआ है। धीरे धीरे देवताओं ने और दूसरे राक्षसों को भी मार भगाया और मनुष्य वहां पर निवास करने लगे। मनुष्यों के निवास होने से काश्मीर का बर्तमान राज्य बन गया। यह पूर्व ऐतिहासिक गाथा है।

विश्वासनीय कथा का पता ईसा के दो हज़ार वर्ष पूर्व से चलता है। काश्मीर अपने प्राकृतिक विशेषताओं के कारण ही अपने जीवन मार्ग में ठोकरें खाता रहा है। जिस प्रकार अधिक लाड़ प्यार के कारण बच्चा कमज़ोर तथा खराब हो जाता है ठीक वही दशा काश्मीर की भी हुई।

थोड़ा परिश्रम करने पर भी काश्मीर के अन्दर सुख पूर्वक भोजन प्राप्त हो सकता था।

महाराज अशोक के समय से हमें काश्मीर के इतिहास का ठीक पता चलता है। महाराज अशोक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। महाराज अशोक ने जगह जगह पर बौद्ध मन्दिर बनवाये थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये ही काश्मीर का भ्रमण किया था।

ईसा के ५०० वर्ष पूर्व काश्मीर में एक अत्याचारी राज्य राज्य करता था। ७०० ई० में ललितादित्य काश्मीर की गद्दी पर बैठा। ललितादित्य ने नहरों और पुलों को बना कर किसानों को सुखी बनाने के लिये सराहनीय कार्य किया था। वह लोग सड़कों, नहरों और नदियों के मार्ग अपने खेती का सामान बेचने के लिये राजधानी तथा दूसरे बड़े नगरों को ले जाते थे।

ललितादित्य को खेल कूद कला और भाषा आदि में बड़ा शौक था। वह हंसमुख स्वभाव का था। उसने अपने देश को सुखी बनाने के लिये दूसरे राज्यों पर भी आक्रमण करके विजय प्राप्त किया था। तिब्बत, एशिया, भारत आदि देशों पर उसकी पताका फहराती

थी। वह सभी देशों को विजय करके वहां से अपने देश को बहुमूल्य तथा सुन्दर कला की वस्तुएँ ले आया था। चतुर, सुजान कारीगर तथा विद्वान लोग देश के लोगों को शिक्षा प्रदान करने के लिये रक्खे गये थे। भारत से वह सोना ले गया और उसने काश्मीर के मन्दिरों को सजाया था।

ललितादित्य बड़ा बहादुर प्रभाव शाली राजा था। उसने काश्मीर को केवल एक स्वतंत्र राज्य ही नहीं वरन् एक साम्राज्य बनाया था। काश्मीर का मार्तण्ड नामक मन्दिर उसी का बनवाया हुआ है। उसके समय में ६ हजार घुड़ सवार तथा ५० हजार पैदल सेना थी। सेना को समयानुकूल भर पेट भोजन दिया जाता था। किलों के अन्दर आपत्तिकाल के लिये भोजन सामग्री तथा लड़ाई का सामान एकत्रित रहता था।

ललितादित्य की मृत्यु के पश्चात् काश्मीर का सूर्य फिर अस्त हो गया। २०० वर्ष तक उसकी अवनति होती रही। उसके बाद अवन्ति वर्मा नामक वहां राजा हुआ। वह न केवल शूरवीर विजयी राजा था वरन् वह एक चतुर शिल्पकार तथा इंजीनियर था। उसने भी राज्य को

उन्नत दिया। अवन्ति वर्मा के पश्चात् जो राजा हुआ वह शूरवीर अथवा कलाकार न था। उसने कांगड़ा तथा पञ्जाब पर धावा किया था। उसके पश्चात् दो तीन राजकुमार तथा उनके संरक्षक मार डाले गये। राज्य के अन्दर अकाल पड़ गया। चारों ओर लहू की नदी बहने लगी और वहां के शासक नीच कुल के अन्यायी राजा होने लगे। जिससे काश्मीर राज्य की बड़ी अवनति हो गई। यह हिन्दू काल था। राज्य के अन्दर बहुत से छोटे छोटे राज्य स्थापित हो गये और छोटे नरेश राज्य करते तथा आपस में लड़ाई झगड़ा करते रहे।

हर्ष बर्धन के समय में काश्मीर के राज्य शासन की दशा बहुत बिगड़ गई थी। ०१५ ई० में मुहम्मद गोरी ने काश्मीर पर धावा मारा परन्तु प्राकृतिक सीमावर्ती कठिनाइयों के कारण उसे सफलता प्राप्त न हुई।

१३३० ई० में शाहमीर नामक मुसलमान ने कोट रानी को गद्दी से हटा कर स्वयं राजा बन बैठा। कोट अन्तिम हिन्दू शासक थी। शाहमीर ने काश्मीर में मुसलमानी राज्य वंश की नीव डाली। शासकों के परिवर्तन के साथ ही साथ धर्म का परिवर्तन भी हुआ। आरम्भ

काल में संस्कृत भाषा काश्मीर के सरकारी दफ़्तरों की भाषा बनी रही और ब्राह्मण लोग राज्य के शासन का काम करते रहे।

चंगेज़खां के एक वंशज जुल्फ़कारखां ने १३२० ई० में काश्मीर पर आक्रमण किया और काश्मीर के लोगों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया था। सिकन्दर का नाम भी कट्टर मुसलमान शासकों में प्रसिद्ध है। उसके शासन-काल में काश्मीर में हिन्दुओं के ऊपर बड़े अत्याचार हुये। मन्दिरों की मूर्तियां निर्दयता के साथ तोड़ी गईं जिसके कारण उसे बुत-शिकन (मूर्ति तोड़ने वाले) की उपाधि मिली थी। उसके बाद के मुसलमान शासक भी अत्याचार करते रहे और हिन्दुओं को मुसलमान बनाते रहे।

ज़ैनुल आब्दीन ने काश्मीर में १४३० से १४७० ई० तक राज्य किया। इस शासक के समय में काश्मीर के अन्दर शान्ति स्थापित रही। देश उन्नति की ओर बढ़ा था और हिन्दू धर्म की ओर उदारता दिखाई गई थी।

१५३२ ई० में मिर्ज़ा हैदर ने लद्दाख से काश्मीर पर

आक्रमण किया। यह मुग़ल विजय थी। १५८६ ई० में अकबर बादशाह ने समस्त काश्मीर पर अपना अधिकार जमा लिया था। मुगल शासन-काल में काश्मीर की दशा अच्छी रही। देश उन्नति करता रहा और हिन्दुओं के प्रति भी अच्छा व्यवहार होता रहा। औरंगज़ेब के शासनकाल में भी हिन्दुओं पर अधिक अत्याचार नहीं किये गये।

१६७४ ई० में इफ़्तिख़ार खाँ को औरंगजेब ने काश्मीर का गवर्नर बनाया। वह बड़ा अत्याचारी तथा अन्यायी था। उसने हिन्दुओं पर बड़ा अत्याचार किया और हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया।

१७५० ई० में मुगल शासन के बाद अफगान शासन की नींव काश्मीर में पड़ी। अफगान शासनकाल में हिन्दुओं के ऊपर बड़े अत्याचार किये किये गये।

यंग हस्बेंड ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि अफ़गान शासन हिन्दुओं के सिर उसी भांति काटते थे जिस प्रकार फूल तोड़े जाते हैं। घास के एक एक बोरे में दो दो, हिन्दू भर कर डाल झील में डाल दिये जाते

थे। हिन्दुओं पर विशेष कर फिर से लगा दिया गया था। उन्हें जजिया कर देना पड़ता था। भय के कारण लोग काश्मीर छोड़ कर भारत की ओर भागे परन्तु उनका पीछा करके शिकार किया गया।

धीरे धीरे अफ़गानों का अत्याचार असहनीय हो गया। काश्मीरी लोग अपनी आशायें महाराज रणजीत सिंह की ओर लगा रहे थे। सिक्खों के महाराजा रणजीत सिंह इस समय तेज़ी से अपना राज्य बढ़ा रहे थे।

बीरबल दर और मिर्ज़ा दर ने रणजीत सिंह की सहायता देने का बचन दिया।

१८१६ ई० में गुलाब सिंह की सहायता से महाराजा रणजीत सिंह ने काश्मीर को अपने राज्य में मिला लिया। सिक्ख लोगों के समय में हिन्दुओं पर उतने अत्याचार तथा अन्याय नहीं किये जाते थे जितने कि यवन काल में होते थे। सिक्ख शासन के पश्चात् महाराज गुलाब सिंह ने काश्मीर का स्वतंत्र राज्य बनाया था जिसमें काश्मीर और जम्मू के वर्तमान राज्य स्थित हैं।

महाराज गुलाब सिंह एक चतुर राजनीतिज्ञ और सूरम सिपाही थे। जिस समय काश्मीर राज्य की

बागडोर गुलाब सिंह के हाथ आई उस समय वहाँ की दशा बड़ी शोचनीय थी। महाराज गुलाब सिंह दोगरा राजपूत थे। उस समय काश्मीर की सरकार प्रजा से कुल उपज का दो तिहाई से तीन चौथाई भाग तक लेती थी। यह वर्तमान समय का तिगुना था। फसल तयार हो जाने पर खलिहान लगाया जाता था। आधा गल्ला सरकार ले लेती थी और आधा में भांति भांति के दूसरे कर भी थे। किसान के पास उपज का एक तिहाई या चौथाई भाग बच रहता था। गुलाब सिंह ने राज्य की शोचनीय दशा का सुधार किया और उसे उन्नति की ओर अग्रसर किया।

१८५७ ई० में गुलाब सिंह की मृत्यु के पश्चात् महाराज रणवीर सिंह गद्दी पर बैठे। रणवीर सिंह ने राज्य की दशा में और अधिक सुधार किया। वह एक बड़े उत्साही सुधारक थे।

वर्तमान समय में काश्मीर नरेश हिज़ हाईनेस श्री महाराजा हरीसिंह जी बहादुर हैं। आप १९२५ ई० में राज्य सिंहासन पर बैठे हैं। जिस समय आप गद्दी पर

बैठे उस समय अँग्रेज रेज़ीडेन्सी राज्य कार्य में दख़ल देती थी।

काश्मीर का शासन करना कोई सरल कार्य नहीं है। वहाँ के अधिकाँश निवासी मुसलमान हैं जो हिन्दू राज्य देखना पसंद नहीं करते हैं। बहुत काल से काश्मीर राज्य की शक्ति वहाँ के ब्राह्मण पंडितों के हाथ में रही थी। इससे महाराज को भय प्रतीत हुआ कि कहीं राज्य प्रबंध में गड़बड़ी न पड़े। इसी कारण वह स्वयम् राज्य प्रबंध का कार्य अपने हाथ में लिये हैं और उसे ठीक मार्ग पर लाने का प्रबंध कर रहे हैं। महाराज राज्य प्रबंध को ठीक मार्ग पर लाने का प्रबंध जब कर रहे थे तभी वहाँ १९३१ ई० में विद्रोह हो गया। मुसलमानों ने बड़ी गड़बड़ी मचा दी। विद्रोह दबाने के लिये ब्रिटिश तथा भारतीय सेनाओं का प्रयोग करना पड़ा था। एक निष्पक्ष जांच पड़ताल के पश्चात् महाराज ने शासन में सुधार किया और उसी के अनुसार एक कानून बनाने वाली सभा बनाई जिसमें मुसलमानों को काफी भाग दिया है। एक ब्रिटिश अफसर को प्रधान मंत्री की जगह दी गई है। प्रेस को भी काफी स्वतंत्रता प्रदान की गई

है। किसानों और गरीबों की दशा सुधारने के लिये भी सुन्दर प्रबन्ध किया गया है। महाराज को २१ तोपों की सलामी दी जाती है।

ब्रिटिश रेज़ीडेन्ट श्री नगर और सियालकोट में रहता है। गिल्गिट में भी एक राजनैतिक दूत रहता है। मध्य एशिया के साथ व्यापारिक सम्बंध होने के कारण एक अँग्रेज़ अफसर लेह में रहता है।





काश्मीर के घाट

पर्वतीय घाट (दर्रा) पर पर्वतों को पार करना बड़ा ही सुगम होता है। वही स्थान सब से नीचा स्थान होता है। हिमालय पर्वत में सब से निचला घाट काश्मीर के अन्दर ज़ोजीला का है। यह सोनमर्ग के अनुपम स्थान से मध्य एशिया को जाता है।

यदि हम घाट को अगस्त के आरम्भ में पार करें तो हमें सिंध की घाटी में कई एक स्थानों पर डेरे डाल कर रहना पड़ेगा। वर्षा के कारण हमारे डेरे भीग जाते हैं। शायद हमें सोनमर्ग में एक दिन स्वच्छ मिल भी जावे तो दूसरे ही दिन हमारा डेरा फिर भीग जावेगा। भीगे खेमों को छोड़ देना पड़ता है क्योंकि उनका भार बहुत हो जाता है। हम बालताल से अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं। यहाँ पर सुन्दर हरी घास का मैदान है तथा वृक्षों से पानी की बूँदें टपकती रहती हैं। हम पर्वतीय टेढ़े मार्ग हो कर धीरे धीरे आगे की ओर बढ़ते जाते हैं। यद्यपि पर्वतीय मार्गों में यात्रा करने के लिये खच्चर तथा छोटे घोड़े रहते हैं तो भी हम उन पर से उतर कर पैदल चलते हैं क्योंकि मार्ग सीधा सपाट

(लम्बाकार) हो जाता है। पर्वतीय मार्ग में हम वीरता के साथ ऊपर की ओर चलते जाते हैं। हमारी साँस फूलने लगती है तो भी हम टट्टुओं के सहारे आगे बढ़ते जाते हैं।

मार्ग में सुन्दर जंगली फूल हमारे दिल बहलाव का कार्य करते हैं। वहां पर भांति भांति के फूल होते हैं। वहाँ के निवासी जंगली जड़ी बूटियों को भली भांति जानते हैं और वह लगभग सभी जड़ी बूटियों में कोई न कोई आयुर्वेदिक गुण बतलाते हैं।

वर्षा के कारण कहीं पर भी बैठने का स्थान नहीं मिलता है। वहीं पर ड्रस नदी काली चट्टानों के मार्ग होकर बहती है। यह चट्टानें कोयले की भांति काली होती हैं। यह चट्टानें कड़ी धूप की सूखी हवा से जल कर काली हो गई हैं। कहीं कहीं पर बरफ़ की चट्टानें दिखाई पड़ती हैं जिससे पता चलता है कि यदि वहां की यात्रा अप्रैल या मई में की जाय तो मार्ग में बड़ी कठिनाई उठानी पड़े।

कुछ चट्टियों के समाप्त करने के पश्चात् अम्बला घाट मिलता है। यह हमें सुरु ज़िले को ले जाता है। एक दूसरी संकरी घाटी से चलने पर एक छोटी नदी

चक्कर काटती हुई लाल चट्टानों के मध्य प्रवाह करती मिलती है। नदी का मार्ग सीधा है। मार्ग में घास उगी रहती है। उस मार्ग पर भी हमें टट्टुओं की पूँछ के सहारे ऊपर चढ़ना पड़ता है। मार्ग में लोग कहीं कहीं पर पुष्प उठाने के लिये रुकते हैं पुष्पों का ख़ज़ाना इतना सुन्दर होता है कि यदि कोई उन्हें नहीं उठाता तो आगे बढ़ने पर उसे पश्चाताप होता है। उससे आगे बढ़ने पर हम घाट के शिखर पर पहुंचते हैं।

इस घाट की चोटी की ऊँचाई १५ हज़ार फ़ुट है। वहाँ से चारों ओर का दृश्य साफ साफ दिखाई पड़ता है। उस ऊँचे स्थान पर खड़े होकर यदि हम दृष्टि डालें तो पर्वतीय चोटियों तथा श्रेणियों की अनेक पंक्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। कहीं कहीं पर हिमानी का श्वेत दृश्य दिखाई पड़ता है और हिम के चलने अथवा टूटने से आवाज़ उत्पन्न होती है। समीपवर्ती पहाड़ियाँ लाल तथा भूरी हैं। कुछ काली तथा नङ्गी हैं। वहां का दृश्य इतना अनुपम तथा वायु इतनी सुन्दर होती है कि जैसे ही हम चट्टान के ऊपर आराम करने के लिये लेटते हैं वैसे ही हमारी थकावट दूर हो जाती है।

४००० फुट की ऊँचाई से नीचे आने में हमें वहाँ लगभग अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है।

काश्मीर की घाटी में लौटने के लिये हमें बोट खोल तथा मरगन दो घाटों (दर्रों) को पार करना पड़ता है। बोट खोल घाट बहुत ऊँचा है। वहां पर हिमानी बहुत हैं। स्वच्छ दिन के प्रातःकाल का दृश्य वहां पर बड़ा सुन्दर होता है। वहां पर ठंड बहुत पड़ती है। हिमानी से उतरने पर हमें रमणीक स्थान देखने को मिलता है। हिमानी के पश्चात् वर्द्वान की घाटी आती है। मरगन घाट को पार करने के पश्चात् हम फिर काश्मीर में प्रवेश कर जाते हैं।

ऊलर झील के ऊपर त्रगवल घाट अति रमणीक है। उसे अवश्य देखना चाहिये। बान्दीपुर से सैनिक सड़क गिलगिट और अस्तूर को जाती है। यह भारत के दो प्रसिद्ध सीमावर्ती स्थान हैं। पहले यह एक साधारण मार्ग था परन्तु अब वह सुन्दर सड़क बना दिया गया है।

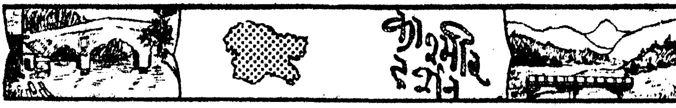
त्रगवल एक सुन्दर स्थान है। उसके चारों ओर बन है। वहां से ऊलर झील का दृश्य बड़ा ही मनोहर दिखलाई पड़ता है। हरमुख पर्वत त्रगवल से बड़ा सुन्दर

तथा स्वच्छ रूप से दिखाई पड़ता है। घाट का मध्यवर्ती स्थान ५ मील आगे १२ हज़ार फुट की ऊँचाई पर है।

काश्मीर के अन्दर बहुत प्राकृतिक पुल हैं। वह पुल बरफ के प्राकृतिक रूप से बनते हैं और बड़े भयानक होते हैं। जब जाड़े तथा वसन्त के आरम्भ काल में बरफ गिरता है तो इन पुलों का निर्माण होता है। बरफ की बड़ी चट्टान पर्वत के ऊपर से नीचे गिरती है और वह सँकरी घाटी में पहुँचता है। सँकरी सड़क के मार्ग को बरफ की यह चट्टान बन्द कर देती है और पत्थर की तरह कड़ी हो जाता है। धीरे धीरे यह हिमानी जून की कड़ी धूप तथा गरमी में पिघल कर टुकड़े टुकड़े होता है और नदी में जा गिरती है। नदी में इस हिमानी के टुकड़ों से कहीं कहीं पर पुल बन जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ काल में यह पुल बड़े मज़बूत तथा सुगम रहते हैं। उन पर खड़े होकर हम नीचे से बहते हुए घड़घड़ाते पानी का अलौकिक दृश्य देख सकते हैं। हिमानी के टुकड़े धीरे धीरे पिघलते जाते हैं। कभी कभी यह पुल धड़ाके के साथ नदी में गिर जाते हैं और पिघल कर नदी के पानी में मिल जाते हैं।

हिमानी के पुल पार करने में बड़े सरल तथा भयानक होते हैं। पहाड़ी निवासी लोग पर्वतीय नदियों को पार करने के लिये लकड़ी तथा लट्ठों के पुल बनाते हैं जिन पर कुली लोग बड़ी खुशी के साथ उन्हें निडर पार कर जाते है। कही कहीं तो वृक्ष समूचा काट कर ही पुल बनाते हैं और यदि सोता अधिक चौड़ा हुआ तो उसे पार करने के लिये वे वृक्ष गिरा दिये जाते हैं।

काश्मोर की घाटी में झेलम नदी में बहुत से पुल बने हैं। खानबल का पुल महाराज प्रताप सिंह का बनवाया हुआ है। यह पुल १८६४ ई० में बना था। वन विहार नामक पुल को १६३१ ई० में दारा शिकोह ने बनवाया था। संगम पुल १६१० ई० में बना और महाराज प्रताप सिंह काश्मोर नरेश ने बनवाया था। पुदगामपुर के पुल को सुल्तान हैदर ने बनवाया था। इसके सिवा पामपुर, पाँडचूक, अमीर कदल, हब कदल, फतेह कदल, श्याना कदल, नब कदल, सुम्बल, हाजिन, सोपुर, नौरोज़पुर, बारामूला, डोमेल और कोहालो आदि पुल है।



नदी का जोवन

काश्मोर के पर्वतों का वर्णन करते हुए हम प्राकृतिक रूप से नदियों की ओर पहुँच जाते हैं। समुद्र से अलग होने के कारण प्रत्येक देश को हानि उठानी पड़ती है। काश्मीर समुद्र के अनुपस्थिति होने के कारण व्यापार में उन्नति नहीं कर सका और न दूसरे देशों से सम्बन्ध स्थापित कर सका है परन्तु यह सारी बातें धीरे धीरे बदलती जा रही हैं।

कहा जाता है कि जब मानव जाति का संसार में संचार न था तो समुद्र की एक शाखा पूना ज़िले की ओर बढ़ी थी और शायद उसी में झेलम नदी गिरती थी।

काश्मीर की सब से बड़ी नदी झेलम है। काश्मीर राज्य में यह १७० मील बहती है। झेलम बर्द्दान से निकलती है। झेलम एक पवित्र नदी मानी जाती है और उसका आरम्भ अनन्तनाग (इस्लामाबाद कस्बे) के समीप है। वह स्थान श्रीनगर से २० मील की दूरी पर है। उससे नीचे की ओर बारामूला तक ६० मील में नदी के अन्दर नावें चल सकती हैं। काश्मीर में टाँगों द्वारा यात्रा अधिक होती है। वहाँ टाँगों में अधिकतर टट्टू

(छोटे घोड़े) जोते जाते हैं। जब पहाड़ पर जाने तथा उतरने का समय होता है तो ताँगों का प्रयोग अधिक होता है। कठिन परिश्रम पड़ने के पश्चात टट्टुओं को कुछ देर साँस लेने के लिये रोक देते हैं। उसी समय उन्हें एक रोटी का टुकड़ा या थोड़ी शकर खाने को दे दी जाती है। कोचवान उसी थोड़े समय में उसे प्यार करने के लिये उसके शरीर पर हाथ फेर देता है। बस इतने ही में वह फिर सचेत तथा सजीव हो जाते हैं और कोचवान का संकेत पाते ही ताँगा लेकर चल पड़ते हैं।

श्रीनगर से बारामूला की यात्रा नदी द्वारा की जा सकती है। यात्रा के लिये छोटी छोटी नावें रहती हैं जिनमें बैठने तथा लेटने के लिये स्थान बना रहता है।

नदी की चौड़ाई लगभग १०० गज़ है और अधिक गहरा नहीं है। यदि यात्रियों के साथ सामान अधिक रहता है तो कई नावें साथ साथ चलती हैं। भोजन तयार करने वाली नाव अलग रहती है जिससे समय समय पर भोजन मिलता है। रात के समय यात्रा जारी रहती है और लोग नाव के ऊपर सोते चले जाते है।

नदी में कभी कभी तूफान आ जाता है। तूफान के समय कोई नाव नहीं चलाता क्योंकि नाव के डूब जाने का भय रहता है।

झेलम नदी में बहुधा बारामूला के संकरे स्थान पर नदी में शिलाएँ बह आती है जिससे मार्ग बन्द हो जाता है। मार्ग के बन्द हो जाने से बड़ी कठिनाई होती है। प्राचीन काल में यह कठिनाई और अधिक होती थी क्योंकि उस समय सामान आदि उठाने के लिये लिफ्ट (सामान उठाने की कल) नहीं थे।

महाराज अवन्ति वर्मा के समय (९०० ई० के पूर्व) एक बार बारामूला में पत्थर की शिलाऐं बाढ़ के कारण आकर रुक गई जिससे नदी का मार्ग बन्द हो गया। बड़ी कठिनाई का सामना पड़ा परन्तु उस समय के एक चतुर मनुष्य (सुय्या) ने एक मुट्ठी रुपये उसी स्थान पर डाल दिये और उस समाचार को चारों ओर फैला दिया। शीघ्र ही बीसों की संख्या में वहां के निवासी रुपये की लालच से दौड़ कर पहुँच गये। उनके ढूंढने, छीना-झपटी और झगड़े के कारण पत्थर के रोड़े हट गये। मार्ग साफ हो गया और बाढ़ से रक्षा हो गई।

देश दर्शन

काश्मीर के निवासियों को बाढ़ के कारण कष्ट होता है तो भी इसमें सन्देह नहीं कि अधिक पानी होने के कारण ही कश्मीर सुखी बना है। मनुष्य के जीवन के लिये भोजन से पानी की आवश्यकता कम नहीं है। बहुत से स्थानों पर पहाड़ के नीचे से पानी को धाराएँ निकलती हैं।

अचिबल का सोता अधिक प्रसिद्ध है। इस सोते का पानी गरम से गरम समय में भी ठंडा रहता है। इस बात का पता जहांगीर की स्त्री नूर महल ने पता लगाया था। उसने वहां पर मुगल वाटिका बनवाई थी जिसके अन्दर उस सोते का कुछ भाग है।

वेरीनाग के गहरे नीले पानी के कुण्ड से झेलम नदी निकलती है। जब जहांगीर मरने लगा था तो उसने वेरीनाग के गहरे कुण्ड का पता लगाने के लिये कहा था। इसके सिवा और भी दूसरे कई एक गहरे सोते हैं। गंधक तथा गरम पानी के सोते भी बहुत हैं। गरम सोतों में स्नान करने से रोग छूटते हैं।

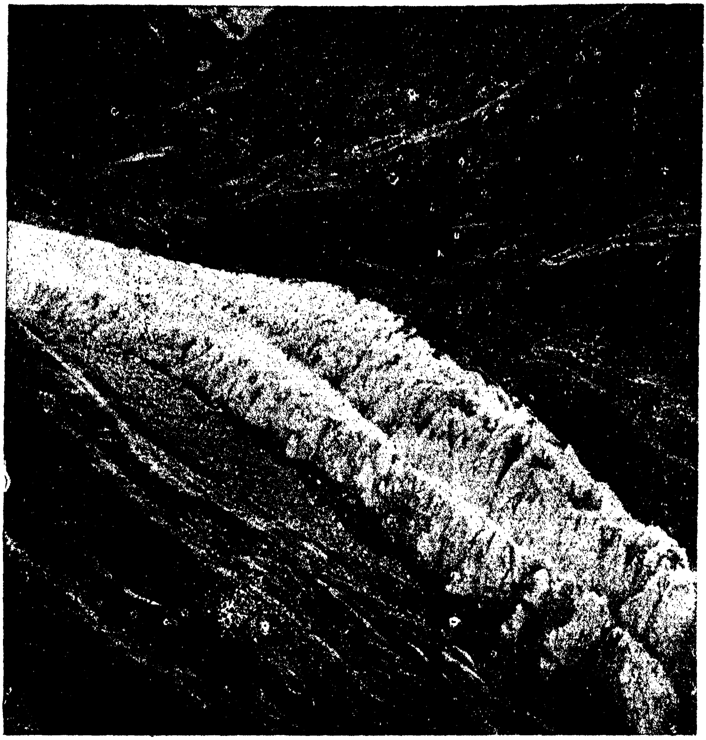
बाढ़ के समय में झेलम नदी बड़ी भयानक हो जाती है। बाढ़ जुलाई में आती है। जब बाढ़ का समय होता



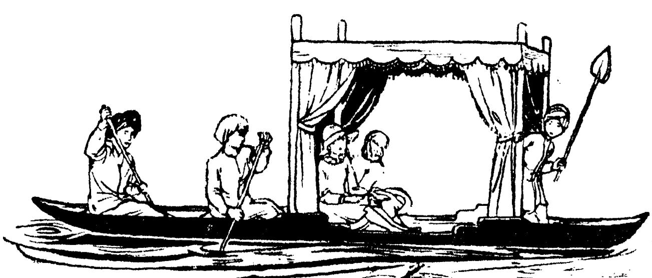
लद्दाखी स्त्रियां अपने सादे करघे पर बहुत ही मज़बूत कपड़ा बुनती हैं।



काश्मीर के बालक।



कराकोरम का एक ग्लेशियर (हिमागार)



काश्मीर की नाव।



काश्मीर का एक साधारण दृश्य



एक पहाड़ी पोस्ट आफ़िस

है तो बाँधों की रक्षा करने वाले पदाधिकारी गण तथा इँजीनियर पता लगाते रहते हैं कि कहीं बाँध टूट तो नहीं गया है। सब से बड़ा बाँध श्रीनगर में है।

१८६३ ई० में एक भीषण बाढ़ आई। बाढ़ एक ठोस पानी की दीवार की भाँति थी। उस बाढ़ के सामने बँगले, पुल, नावें आदि सभी बह गये। बाढ़ के पानी से झील का पानी दसगुना बढ़ गया।

ऊलर झील में पर्वतों से निकलने के पश्चात् झेलम नदी चौड़ी हो जाती है। ऊलर झील भारतवर्ष की सब से बड़ी झील है। ऊलर के पश्चात् बारामूला के बीच नदी का पर्वतीय मार्ग बड़ा ही संकरा तथा जटिल है।

झीलें तथा तैरती वाटिकाएँ

यदि श्रीनगर की यात्रा की जावे तो नाव के घरों में रहना अधिक अच्छा है। नावों में रहने, नहाने, धोने आदि के लिये प्रबन्ध रहता है। सामान रखने के लिये नावें अलग होती हैं और आराम करने के लिये दूसरी नावें रहती हैं।

वहाँ नावों का एक बड़ा बेड़ा रहता है। बेड़ा बड़ा ही सुहावना होता है। नौकर बड़े प्रसन्न होते हैं। वह दुकानदारी के लिये जाते से प्रतीत होते हैं। नौकर लोग अपना वेतन यात्रियों से पहले ले लिया करते हैं।

काश्मीर के नाव-घरों (नौका-गृहों) की स्थिति तथा चौहद्दी बड़ी रमणीक होती है। वहाँ पर प्रसिद्ध बाग़ अथवा वाटिकाएँ होती हैं। कुछ वाटिकाएँ राजाओं द्वारा लगवाई गई हैं। इसलिये वह अधिक प्रसिद्ध हैं। मुग़ल सम्राट जहाँगीर की महारानी नूर महल ने वहाँ पर सुन्दर वाटिका बनवाई थी जिसमें उसने संगमरमर के चबूतरे, फव्वारे, लम्बी नहरें और अनोखे मार्ग बनवाये थे। वहाँ पर ग्रीष्म ऋतु के घर बने हैं जिनकी दोनों बग़लें

श्याम संगमरमर की हैं। यदि हम उनके मध्य होकर जाते हैं तो हमें उन्हीं प्राचीन दिनों की याद आ जाती है। इन स्थानों को बनाने के लिये दिल्ली से संगमरमर तथा कारीगर मँगाये गये थे। जहाँगीर सचमुच ही अपनी स्त्री नूरजहाँ से बहुत प्रेम करता था। इसी कारण उसकी स्मृति में उसने आगरा में श्वेत संगमरमर का ताजमहल बनवाया था।

सच्चे बाग़ अथवा बन लगाने वालों को बड़ा ही विचारशील तथा सोचने वाला अथवा निःस्वार्थी होना चाहिये क्योंकि उन्हें अपने किये हुए कार्य की पूर्ण सुन्दरता को देखने का शायद ही सौभाग्य प्राप्त होता है। ऐसे मनुष्य अपने आगामी सन्तान को अपने सर्वोत्तम गुण दे जाते हैं। जब हम नूरमहल वाटिका में जाते हैं तो वृक्षों के नीचे वहाँ की सुन्दरता देख कर हमारे सिर बनाने वाले का आदर करने के लिये स्वयं झुक जाते हैं। शालमार बाग़, नसीम बाग़, निशात बाग़ (खुशी की वाटिका) ऐसी अनोखी सुन्दरता वाले हैं कि उन्हें देख कर बहुतों ने गीत तथा गानों की रचनाएँ कर डाली हैं।

देश दर्शन

काश्मीरी लोग फूल बहुत पसन्द करते हैं और जापानियों की भांति वसन्त ऋतु में बौर तथा फूलों का अवलोकन करने के लिये घूमने निकला करते हैं। वह झुंड बना कर पहले उस पहाड़ी के नीचे तक जाते हैं जिसके ऊपर किला बना है। वहाँ पर वह आलूबुखारा के पुष्पों का सुन्दर दृश्य देखते हैं। उसके बाद वह निशात बाग़ आते हैं और वहाँ लिलाक फूल की अनुपम सुन्दरता का दर्शन करते हैं।

काश्मीर की सैर करने वालों के लिये दल झील एक आकर्षण का स्थान है। उस झील का पानी इतना स्वच्छ है कि चारों ओर की पहाड़ियों की छाया उसके अन्दर साफ साफ दिखाई पड़ती है। दल झील के जो चित्र लिये जाते हैं वह भी बड़े साफ आते हैं। रंग बिरंगे वृक्षों तथा बर्फीले पर्वतों की शोभा अनुपम होती है। झील के अन्दर सुन्दर मछली मारने वाली छोटी नावें अपने श्वेत पालों के साथ इधर उधर चलती रहती हैं। उनके पाल सफेद डहनों की भांति प्रतीत होते हैं।

यह झील एक पानी की नहीं बनी है। तैरती वाटिकाओं तथा छोटे द्वीपों को छोटी छोटी नहरें पार करती

हैं। तट पर गाँव तथा फूलदार वाटिकाएँ हैं जिनकी लम्बाई पाँच मील और चौड़ाई २ मील है।

बाहरी झीलों में मानसबल बड़ी सुन्दर है। यह सिन्ध नदी और पर्वतों के मध्य में है। यह पहाड़ों के बीच में बन्द है और वहाँ सँकरे जलमार्ग द्वारा सँकरी नावों से लोग जाते हैं। इस झील में भी एक दूसरे मुग़ल बाग़ के खँडहर तथा बचे हुए भाग हैं।

ऊलर झील के सिर पर बांदीपुर गांव है जहां से गिल्गिट के लिये सड़क आरम्भ होती है। इस झील में सिन्ध झेलम और दूसरी नदियों का पानी मिलता है। बसंत ग्रीष्म और पतझड़ ऋतुओं में यह झील बड़ी रमणीक रहती है परन्तु जुलाई, अगस्त और सितम्बर में मच्छड़ों तथा मधु-मक्खियों के झुँड के कारण यह बड़ी ही डरावनी हो जाती है। जुलाई, अगस्त और सितम्बर महीनों में काश्मीर की यात्रा में लगभग सभी पानी के मार्गों को यात्री लोग छोड़ना अधिक पसंद करते हैं।

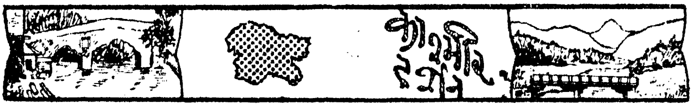
ऊलर झील के ऊपर हरमुख पर्वत के पथरीले केन्द्र पर गँगरबल झील है। यह १२००० फुट की ऊँचाई पर है। काश्मीरी लोग इस झील को बड़ा पवित्र मानते हैं।

वहां के कुछ लोगों का कहना है कि श्री गङ्गा जी इसी झील से निकली हैं।

दल झील के तैरती वाटिकाएं बहुत हैं सिवार घास को इकट्ठा करके बुन कर एक टोकरी सी बना ली जाती है। उसी में उपजाऊ मिट्टी डाल दी जाती है फिर उसी में तरबूज, टमाटर और दूसरे फलदार पौदे तथा तरकारियां लगाई जाती हैं। पौदों को उनकी जड़ों द्वारा पानी मिलता रहता है। यह रंग त्रिरंगी बाटिकाओं का समूह पानी पर तैरती रहती है। साग, तरकारी और फलों से भरे बोटों के समूह बहुधा दिखाई पड़ते हैं।

काश्मीर में आधुनिक वाटिका लगाने का कार्य भी हो रहा है छोटे बंगलों के अन्दर सुन्दर बाटिकाएँ देखने को मिलती हैं। ब्रिटिश रेजीडेन्सी का दृश्य बसंत तथा ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ काल में देखने योग्य होता है।

जब हम श्रीनगर पहुँचने को होते हैं तो हमें सुन्दर वृक्षों के मार्ग मिलते हैं। मार्गों में दोनों ओर अनोखे वृक्ष लगाये गये हैं। मार्ग भी बड़े मनोहर बने हैं। यह नूरजहां के लगवाये हुये हैं। उसने शाही मार्ग बनवाए थे।



चांदनी रात में काश्मीर की नदियों तथा झीलों में नाव की यात्रा बड़ी ही मनोहर होती है। आकाश की शोभा भी अवर्णनीय होती है। कवियों के लिये वहाँ पर अनोखे तथा अगणित विषय लिखने के लिये होते हैं। काश्मीर की हवा खानी मानो कविता की हवा खानी है। वह एक परियों का देश है जिसे हम केवल विचार धारा में देखा करते हैं।

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आकाश वृक्षों पहाड़ियों झीलों वाटिकाओं आदि का दृश्य अनुपम हो जाता है। उस समय रंग विरंगा चित्र जो हमारे सामने आता है उसे हम कदाचित् ही अपने जीवन में भुला सकते हैं सूर्योदय और सूर्यास्त के समय बर्फीली चट्टानों, धान के खेतों आदि का दृश्य जो होता है वह वर्णन को नहीं वरन् देखने के योग्य ही होता है। काश्मीर की सुन्दरता का वर्णन करना कठिन है। इसी कारण काश्मीर को स्वर्ग भूमि कहा जाता है।

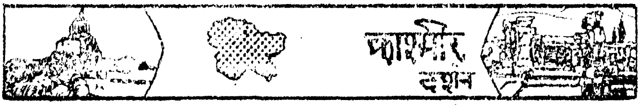
देश दर्शन

काश्मीर की घाटियां

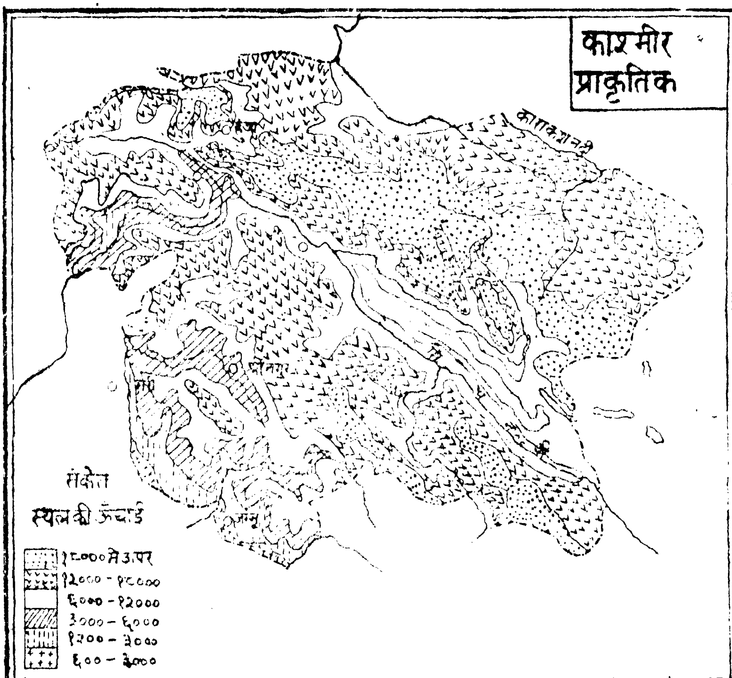
घाटी शब्द का नाम सुनते ही हमारा हृदय उसकी सुन्दरता सुनने अथवा देखने के लिये उत्सुक हो उठता है। मुख्य काश्मीर देश झेलम की घाटी से कहीं बड़ा है। झेलम की घाटी दूसरी नदियों के द्वारा कई भाग में विभाजित हो जाती है और उन नदियों से कई एक घाटियां बन जाती हैं। घाटियों के नाम नदियों के नाम पर ही रक्खे गये हैं।

काश्मीर की अधिकांश घाटियों का इतिहास यह है कि वह आदि काल में झीलें थीं। स्वयं काश्मीर देश ही एक बड़ा सागर था। जब बड़े सागर को ब्रह्मा के पौत्र ने खाली किया तो ब्राह्मणों को वहां बसाया जिससे वह वहाँ पर खेती करें। बारामूला के चट्टानी कंदरा द्वारा पानी काश्मीर में डाला गया। इस प्रकार की गाथाएँ अशिक्षित लोगों के मध्य प्रचलित हैं।

काश्मीर की मुख्य घाटियां सिन्ध, लिदर, वरद्वान और लोश्राब हैं। इसके सिवा और भी दूसरी छोटी छोटी बहुत सी घाटियां हैं।



सिन्ध नदी ६० मील अनोखे दृश्य के मध्य होकर बहती है। नदी का पानी कहीं फेनदार होता है, कहीं वह



संकरे मार्ग होकर चलती है तो कहीं अपनी चौड़ी धार के साथ वह जंगली झोपड़ों तथा चरागाहों के मध्य बहती है।

देश दर्शन

सिन्ध नदी लद्दाख पर्वतों से उठती है और नीचे की ओर बढ़ती हुई जौंजीला की घाटी में बलतल के समीप प्रवेश करती है उसके बाद सोनमर्ग में होकर गुज़रती है उसके पश्चात् वह काश्मीर की दूसरी नदियों की भांति झेलम से मिल जाती है।

सिन्ध नदी के किनारे किनारे बनैले फलों के वृत्त हैं।

सिन्ध की घाटी में मीलों चरागाह है। चरागाह के अन्दर यदि कोई भ्रमण करे और यहां वृत्तों की छाया में आनन्द लेने के लिये ठहरे तो उसे प्रतीत होगा कि कदाचित वह अपने घर पर ही आराम कर रहे हों। वहां पर शान्ति का राज्य है। आधुनिक कोलाहल का नाम भी नहीं है। वहां अपूर्व शान्ति प्राप्त होगी।

सिन्ध की घाटी में बन के अन्दर लोग बर्च वृक्ष की छाल का बिस्तर बनाते हैं। उस बिस्तर पर वृत्त के नीचे आराम करने वाले, देवदार की भीनी सुगन्ध मस्त बना देती है।

सिन्ध घाटी के बाद लिदर घाटी का नम्बर है। यह नदी हिमानियों से निकल कर नीचे आती है और

चरागाहों के मध्य बहती है और बर्च तथा सनोवर के बनों के मध्य होकर गुज़रती है। ईशमाकन के समीप नदी का पाट चौड़ा हो जाता है वहां पर पहाड़ों के ऊपर एक प्राचीन मठ है। मठ में साधु लोग रहा करते हैं।

पहलगम स्थान पर सनोवर के वृक्षों का एक सैने-टोरियम है पहलगम स्थान के आगे का दृश्य और अधिक जङ्गली होता जाता है। इसी घाटी से कोलाहोई चोटी के नीचे वाले बनों तथा अरू घाटी को मार्ग जाता है।

मुख्य घाटी सीधे शेश नाग को जाती है और उससे आगे ऊपर अमरनाथ का पवित्र स्थान तथा मन्दिर है। अमरनाथ अपनी पवित्र गुफा के लिये प्रसिद्ध है और प्रति वर्ष हज़ारों यात्री वहां दर्शन के लिये जाते हैं। अमरनाथ समुद्र के धरातल से १३,५०० फुट की ऊँचाई पर है। अगस्त मास में अमरनाथ के दर्शन का मेला होता है और भारत के कोने कोने से लोग आते हैं। अमरनाथ लम्बाकार चट्टानों के मध्य में स्थित है। वहां पर वृक्ष नहीं है और भूरे रँग की खाली चट्टान का धरातल है। अमरनाथ के ऊपर चारों ओर स्तम्भाकार घाटियां हैं। समीप ही कोहनूर पर्वतों के सुन्दर दृश्य हैं।

वहां पर शिव भगवान के नांदिया बैल की पत्थर की मूर्ति है।

वहां पर लिद्र और सिन्ध घाटी के मध्य एक मार्ग है जो समस्त साल पार करने योग्य नहीं। साम में केवल कुछ ही समय उसे पार करना सम्भव होता है।

वर्द्वान नदी सूरू पर्वतों के पानी को लेकर काश्मीर के पूर्वी भाग होकर बहती है। नदी के तट पर किसानों के झोंपड़े बने हुये हैं। इस घाटी की ऊँचाई २००० फुट है और इतनी सुन्दर है कि कलाकार को वहां पर चित्र कारी के लिये बहुत से विषय मिल सकते हैं। कहीं कहीं गांव बसे हैं जिनके चारों ओर सनोवर के काले बन हैं। नदी के दोनों तट पर चरागाहें पहाड़ियां आदि हैं।

लोआब की घाटी अपने देहाती रूप रेखा के देखने योग्य है। घाटी के अन्दर लगातार गांव पाये जाते हैं। गांवों में बड़े बड़े खलिहान उनकी सुन्दरता को और अधिक बढ़ा देते हैं। जगह जगह पर अखरोट के बाग मिलते हैं। लोआब नदी बड़े सुन्दर प्रदेश होकर बहती है। नदी समतल मैदान पहाड़ी और सनोवर के बनों में



होकर हबती है। अधिक आगे चलने पर काजी-नाग का स्थान है।

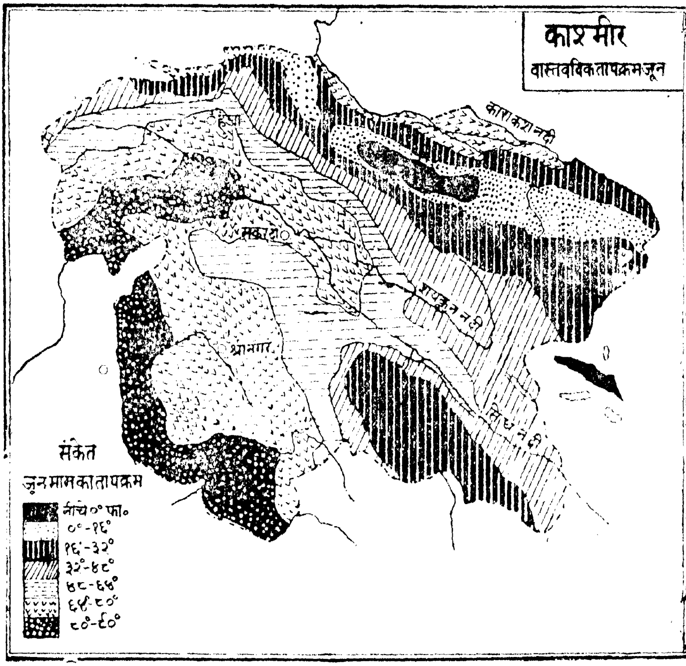
इस घाटी में खूब खेती होती है वहां पर खेती करना बड़ा सरल है। वहां की भूमि अच्छी है और पानी भी बहुत है। जुलाई अगस्त मास में सूर्य की धूप होती है परन्तु कड़ी धूप कभी भी नहीं होती है।

इस घाटी के लोग अपने बाड़े अच्छे नहीं बनाते हैं। घाटी में भोजन लकड़ी और पानी की अधिकता है।



जलवायु

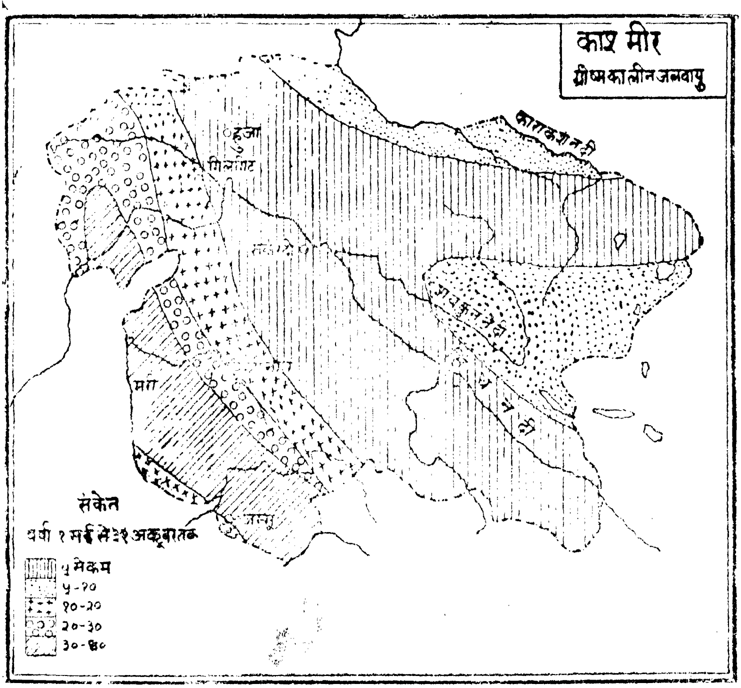
ऊँचाई के कारण गरमी का सब कहीं अभाव है। ग्रीष्म काल अत्यन्त मनोहर होता है। पर शीतकाल में



विकराल जाड़ा पड़ता है। उत्तरी घाटियों और हिमाच्छादित चोटियों से ठण्डी हवा नीचे खिसक आती है और

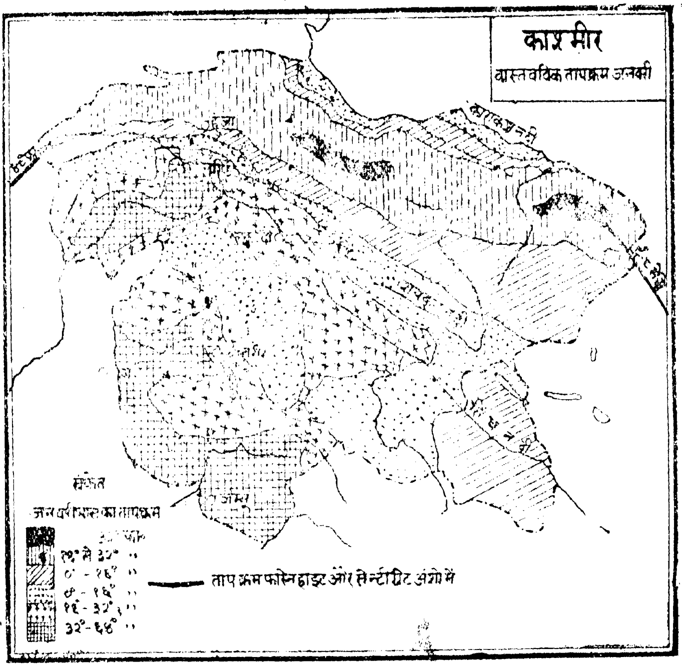


ठण्डक बढ़ा देती है। दक्षिणी घाटियों में कुछ कम जाड़ा पड़ता है फिर भी झीलें कुछ कुछ जम जाती हैं। वर्षा



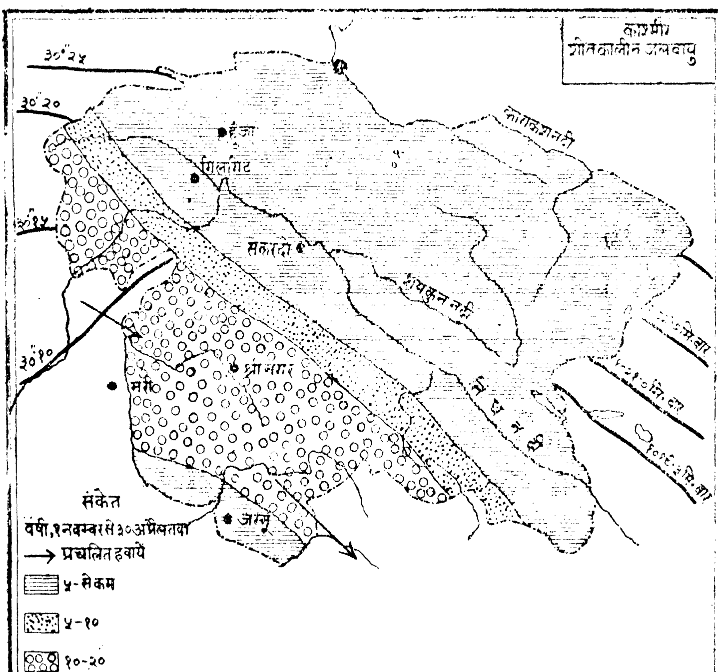
कम होती है। वर्षा की यहां दो ऋतु हैं। गरमी में जून से सितम्बर तक और सरदी में दिसम्बर से अप्रैल तक

पानी बरसता है। भीतर की ओर बर्षा की मात्रा और भी कम है। लेह के आस पास बर्षा और हिमपात



दोनों की मात्रा साल भर में ३ इंच से अधिक नहीं होती है। इसी खुश्की के कारण दक्षिणी ढालों की

अपेक्षा उत्तरी ढालों पर हिमरेखा अधिक ऊँचाई पर मिलती है ।

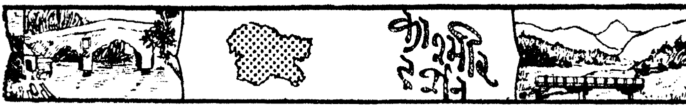


वनस्पति

वनस्पति, बन, फल और फूल

काश्मीर के फल उत्तरी भारत तथा काश्मीर के लिये एक बड़े बर्दान के स्वरूप हैं। वसन्त ऋतु में देहात में भांति भांति के फूल दिखाई पड़ते हैं जो वहां की सुन्दरता को और भी अधिक बढ़ा देते हैं। बेर की भांति बहती बरफ, नाशपाती, पुष्प के सुन्दर प्याले, खूबानी और सेव के सुन्दर रंग, बादाम और शफ्तालू के गुलाबी रंग के चमकीले फूलों के दृश्यों का वर्णन करना असम्भव सा प्रतीत होता है। जो मनुष्य प्रकृति सुन्दरता तथा विशेषताओं की ओर ध्यान नहीं देता जब वह काश्मीर के अखरोट की पत्तियों की मधुर सुगन्ध का पान करता है और अंगूर की लताओं को देखता है तो उसका भी हृदय प्रफुल्लित हो उठता है। सुन्दर पीले फूलों के समुद्र हमें वसन्त ऋतु की याद दिलाते तथा सरसों के खेतों का पता बताते हैं। सरसों के खेतों के साथ ही साथ नीले पटसन तथा अलसी के खेत भी प्रकृति की सुन्दरता की शोभा और भी अधिक बढ़ा देते हैं।

पतझड़ की ऋतु में हमें बैलगाड़ियों की एक डोर सी मिलती है जो सेव से भरी हुई घुमावदार पर्वतीय



मार्गों से होकर पञ्जाब के मैदान की ओर आती है। काश्मीर में अंगूर भी पैदा किया जाता है परन्तु शोक की बात यह है कि अंगूर पकने के पहले तोड़ कर बेचने के लिये बाज़ार में पहुंचा दिये जाते हैं। काश्मीर में अंगूर की लाल तथा सफेद मामूली शराब भी तयार की जाती है। यह शराब इस योग्य नहीं होती है कि बाहर भेजी जा सके।

शहतूत की खेती बहुत होती है यह जानवरों तथा मनुष्यों दोनों के भोजन का काम देता है। शहतूत के पेड़ खास तौर पर रेशम के कीड़ों के लिये लगाये जाते हैं। अखरोट और मेवा की उपज भोजन के हेतु की जाती है। अखरोट को लकड़ी के बड़े पीपों में एकत्रित करते हैं। ताज़े अखरोट बड़े स्वादिष्ट होते हैं। अखरोट बाहर को भी भेजे जाते हैं। सबसे अच्छे अखरोट खाग्स कहलाते हैं। ऊलर झील में मीलों सिंघाड़ा लगाया जाता है। इसके सिवा काश्मीरी लोग और और दूसरी जड़ी बूटियों को भी भोजन में प्रयोग करते हैं।

काश्मीर के वृक्ष बड़े सुन्दर होते हैं। चिनार के कुञ्ज बड़े ही मनोहर होते हैं। काश्मीर जाने वाली सड़कों पर चिनार के सुन्दर कुञ्ज देखने को मिलते हैं। सनोवर

के वृक्ष सभी वृक्षों से ऊँचे तथा सख्त होते हैं। देवदार का वृक्ष भी बड़ा सुन्दर होता है। यह हिमालय प्रदेश में बहुत होता है देवदार का बृक्ष समुद्र के धरातल से ४००० से ६००० फुट की ऊँचाई पर उगता है। इसके सिवा आश, मेप्ल, अंजीर एल्म और भांति भांति के सनोवर तथा देवदार के वृक्ष होते हैं। जब सूर्य का प्रकाश वर्षा के पश्चात् होता है तो देवदार की भीनी गंध को लोग बारबार नास करते हैं। मार्गों में सुपारी और फूलदार कटीली भांति भांति की झाड़ियाँ होती है। कुछ घाटियों सदा बाहर के वृक्ष पाए जाते हैं जिनका रंग बड़ा ही भड़कीला तथा सुहावना होता है।

काश्मीर में अगणित भांति के वृक्ष पाए जाते हैं। ऊँची घाटियों में सुन्दर पार्क पाये जाते हैं। यह पार्क प्राकृतिक होते हैं। पहाड़ों के नीचे बड़े बड़े बन पाए जाते हैं जिनके वृक्षों के तने चलने वाले यात्रियों के सिर के ऊपर दिखाई पड़ा करते हैं।

काश्मीर के शान्तिमय बनों का भ्रमण करते हुये हमें अचानक ही ईश्वर की याद आ जाती है और हम मठों तथा मन्दिरों की बात सोचने लगते हैं। बनों



तथा पर्वतों के ऊपर शान्ति का राज्य होने के कारण ही धार्मिक स्थानों का होना भी आवश्यक हो जाता है।

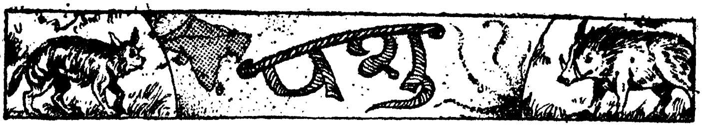
छोटे बनों में जंगली गुलाब, बेला, चमेली और मागधी आदि पुष्पों के पौदे बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। काश्मीर के पुष्पों की गणना वहां के आनन्दमय प्रधान वस्तुओं में से है। झीलें में सुन्दर कमल का फूल अपनी गुलाबी तथा सफेद पंखड़ियां इस प्रकार फैली रहती हैं मानो वहां पर तैरती दरिया का समूह फैला हुआ है। कमल के साथ ही साथ नीली और सफेद कमलनी के पुष्प भी फैले हुये दिखाई पड़ते हैं। कमल फूलों का राजा माना जाता है। कमल से लेकर छोटे से छोटे अल्पाइन पुष्प तक के सभी फूल काश्मीर में वर्तमान हैं। घाटियों तथा पर्वतीय ढालों पर भांति भांति के फूल होते हैं।

देवदार की लकड़ी मकान बनाने के काम आती है मन्दिरों के सुन्दर नक्क़ाशदार स्तम्भ इसी के बनाये जाते थे। छोटी छोटी नावें भी इसी लकड़ी की बनाई जाती थी। अखरोट की लकड़ी भी देवदार ही की भांति गृहस्थी के सामान तयार करने के लिये प्रयोग की जाती है। आश की लकड़ी नावों के डाँड तथा हल

बनाने के काम आती है। रस्सी, चटाई और डोर तयार करने के लिये रेशेदार पौदों की खेती की जाती है।

वृक्ष की छाल को प्रयोग करने योग्य तयार करने में बड़ा परिश्रम किया जाता है। सनोवर की छाल से मज़बूत काग़ज तयार किया जाता है। इस पर पानी नहीं भेद सकता है। जाड़े के दिनों में खिड़कियों के अन्दर यह शीशे के स्थान पर लगाया जाता है।

हिमालय प्रान्त में इन्द्रधनुष, करनफूल, गुललाला, सोसन, छुअमुई, सूर्यमुखी, गेंदा, क़दम, त्यूरइया, समृद्ध, गुलबहार, काकुञ्जकी, खशखश, गुलमेंहदी, मूँगरा, बेला, चमेली, केतकी, चम्पा, गुलाब, नशतरन, इब्बूगुल-रैंदा, शमशाद, अनार, मोंगरा, चिनार, गुलअब्बास, गोइहर, गुल दोपहरिया, गुल चाँदनी, कनैल आदि भांति भांति के पुष्प पाये जाते हैं। इसके सिवा भांति भांति के काश्मीर में घास भी भिन्न भिन्न प्रकार की पाई जाती है। झाड़ियाँ, लताएँ और दूसरे छोटे पौदे बहुत है। वहाँ सचमुच ही बनस्पति का भंडार है। इसी से वहाँ ऊन पैदा करने वाले पशु अधिक हैं। लताएँ तथा अँग्रेज़ी फूल भी पाये जाते हैं।



काश्मीर में सुन्दर पशु अपने प्राकृतिक भाव में रहते हुये पाए जाते हैं। मारमोत नामक पशु ऊँचे पर्वतीय स्थानों पर पाया जाता है। उन स्थानों पर भोजन के लिये सामग्री कम दिखाई पड़ती है।

सब से ऊँचे स्थानों पर छोटे छोटे पहाड़ी पशु मिलते हैं जो कर्ण बेधी वाणी का उच्चारण करते हैं उनके ऊपर मोटे लाल तथा भूरे रंग के बाल होते हैं। जब वह अपने पिछले पैरों के बल चट्टानों के ऊपर बैठते हैं तो देखने में बड़े सुन्दर प्रतीत होते हैं परन्तु जैसे ही उन्हें मनुष्य के आगमन का किञ्चित मात्र पता चलता है वह पलक मारते आंखों से ओझल हो जाते हैं और अपने बिलों में प्रवेश कर जाते हैं।

रीछ

यह पशु काश्मीर राज्य के लगभग सभी भागों में पाया जाता है इनके शिकार का सर्वोत्तम समय सितम्बर से नवम्बर मास के मध्य तक होता है। काले रीछ पहाड़ों के नीचे पाये जाते हैं भूरे तथा लाल रीछ ऊपर पहाड़ों पर मिलते हैं। भूरे रीछ लोलाब घाटी में बहुत

है। वह अखरोट सेव के वृक्षों तथा मक्का के खेतों में रहते हैं।

तेंदुआ और चीता

यह काश्मीर की घाटी के प्रत्येक भाग में पाया जाता है। स्वेत तेंदुआ तुवरा घाटी में लेह सड़क पर बहुत मिलता है। शेशनाग के ऊपर ब्रारिअँगम और लिदार में भी पाया जाता है।

बारासिंघा

यह पशु पीर पँचाल की समस्त श्रेणी में पाया जाता है। यह किश्तवार भद्रावाद, चम्ब, काश्मीर की घाटी सिंध तुलास ऊलर झील, लिदार घाटी आदि में भी मिलता है। बारासिंघा के शिकार के लिये सितम्बर से अक्तूबर और जनवरी से १५ मार्च तक का समय बड़ा ही अच्छा होता है।

इबेक्स

इबेक्स बकरी के भांति का एक पशु है। यह पशु लोआब के उत्तर की ओर बद्वान, शूरू और तिल्ले में मिलता है। इनके सुन्दर लम्बी सींगें होती हैं। यह पशु

५४ इंच तक लम्बा ३८ इञ्च तक ऊँचा होता है। इसके पूँछ की लम्बाई ६ इञ्च से ८ इञ्च तक और वज़न लगभग १८८ पौंड के होता है।

गूरल या हिमालय प्रदेश का साँभर

यह पशु पीर पंचाल की श्रेणी और किश्तवार में पाया जाता है। पहाड़ी स्थानों पर साँभर बहुत मिलता है। इसके शिकार में शिकारियों को काफी आनन्द प्राप्त होता है।

मरखोर (जङ्गली बकरी)

इसका मिलना कठिन होता है। इसी कारण इसका मूल्य भी अधिक होता है। इसकी सींगें ५० इंच से अधिक लम्बी होती हैं। यह पीर पंचाल, कजंग और शमशीरी पर्वतों पर मिलता है। बड़े मरखोर के शिकार करने में कई दिन समय लग जाता है।

काले मुश्क वाले हिरण

अब काले मुश्क वाले हिरनों का शिकार बन्द कर दिया गया है। इसे "कुस्तूराह" कहते हैं। यह पशु ६ हज़ार से १३ हजार फुट तक की ऊँचाई पर मिलता

है। इसके शिकार के लिये विशेष आज्ञा की आवश्यकता होती है।

सोरो

यह पहाड़ी बकरी के किस्म का पशु है। यह लिद्दार की घाटी, पीर पंचाल और किश्तवार में मिलता है।

भेड़िया पहाड़ी स्थानों पर पाया जाता है। स्यार काश्मीर में बहुत प्रकार के होते हैं। यह बकरियों का शिकार करते हैं। लोमड़ियाँ काश्मीर में भांति भांति की पाई जाती हैं।

बुरहेल

इस पशु को लद्दाख में नापूँ कहते हैं। यह लद्दाख में बहुत है। २७ इंच सींग वाला बुरहेल मूल्यवान होता है।

जंगली सुअर

यह काश्मीर की घाटियों और पहाड़ियों पर बहुत पाया जाता है।

याक

यह लद्दाख और तिब्बत में पाया जाता है परन्तु इसका शिकार करना, मारना और पकड़ना बिल्कुल

मना है। यह पशु पहाड़ी स्थानों पर बोझा ढोने के काम आता है। ओहर पशु नदियों में पाया जाता है।

इनके सिवा भांति भांति के हिरन, नीलगाय, जंगली गधे, जंगली बिल्ली, कुत्ते और दूसरे भांति भांति के पशु पाये जाते हैं।

काश्मीर में फाख्ता, कबूतर हरे, नीले और भूरे रँग के पाये जाते हैं। चकोर, रामचकोर, अबाबील, कठफोड़वा, सारस, बतख, तोता आदि भांति भांति के पत्ती बनों तथा वृत्तों में पाए जाते हैं। छोटी छोटी चिड़यां बहुत संख्या में मिलती हैं।

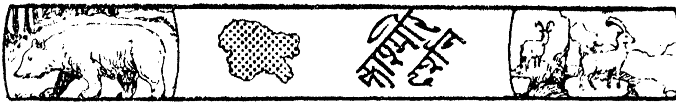
शिकारी को साँप से बहुत होशियार रहना चाहिये जहरीले साँप तथा दूसरे रंगने वाले जानवर वहाँ बहुत हैं। यह जहरीले पशु लिदार की घाटी निशात बाग के समीप बहुत मिलते हैं। जहरीले बिच्छू पहाड़ियों के ऊपर बहुत हैं। यह इतने जहरीले होते हैं कि इन के डंक से मनुष्य शीघ्र ही मर जाता है।

मछली

यह सभी नदियों में पाई जाती हैं। जुलाई और अगस्त का मास मछली के शिकार के लिये बड़ा अच्छा

समय होता है। यह काश्मीर निवासियों के भोजन के लिये अच्छी सामग्री है। माहशीर नामक बड़ी मछली १० पौंड वजन में होती है। यह भीम्बेर मार्ग में मिलती है। छोटी छोटी मछलियों के शिकार बहुत होता है। उड़ती मछलियों के शिकार में बड़ा आनन्द प्राप्त होता हैं। रावलपिंडी में मछली के शिकार के लिये एक क्लब स्थापित है।

ऊन वाले पशु (बकरियां और भेड़ें) इतने अधिक पाये जाते हैं कि उनसे बहुत ज्यादा ऊन तयार होता है। यह ऊन कुछ बाहर भेजा जाता है परन्तु अधिकतर काश्मीर ही में प्रयोग होता है। काश्मीर के शाल-दुशाले तथा काश्मीरा ऊनी कपड़ा बहुत प्रसिद्ध है।



श्रीनगर के उद्यम

विशेष अवसरों पर श्रीनगर का दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है। यह अवसर महाराज काश्मीर के शुभागमन और प्रस्थान के समय होते हैं। सैर करने वाली नावों में महाराज का जुलूस चलता है। कुछ नावों में चाँदनी तथा शामियाने आदि लगे रहते हैं। कुछ नवकाएँ बन्द रहती हैं जिनमें महारानी राज्य घराने की स्त्रियां तथा उनकी नौकरानियां और सहेलियां रहती हैं। नावों को दौड़ाने वाले कुली मज़बूत सुन्दर रस्सियों से किनारे किनारे खींचते हैं। खिड़कियों पर काश्मीरी लाल, नीली, हरी और बैरङ्गी रंग की शालें पड़ी रहती हैं।

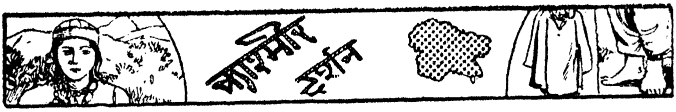
श्रीनगर सूर्य का नगर कहलाता है। वह नगर महाराज के निवास करने योग्य है परन्तु महाराज का महल उतना सुन्दर नहीं बना जितना कि उसे होना चाहिये। महाराज का महल रंग विरंगे चमकीले रंगों से अवश्य रंगा है।

नगर के अन्दर एक अजायबघर (कौतुकालय) है।

जहां पर देखने योग्य वस्तुओं तथा प्राचीन स्मृतियों का संग्रह है। शीशे के सुन्दर पात्रों में बहूमुल्य सुन्दर प्राचीन काश्मीरी शाल रक्खे हैं जिनके कारण काश्मीर का नाम प्रसिद्ध है। शालों के रंग बड़े सुन्दर हैं और उनके धागे रेशमी ऊनी हैं। आजकल वैसी शालें देखने में नहीं आती हैं। इन शालों का पहिनावा १४०० ई० में एक राजा ने आरम्भ किया था। शाल बनाना किसी समय के काश्मीर का मुख्य व्यवसाय था परन्तु अब यह व्यवसाय कम हो गया है।

अब गोटे पट्टे का काम अधिक होता है गोटा पट्टा अच्छे रेशम तथा ऊन या मलमल पर होता है। मामूली ऊनी कपड़े पर भी मामूली गोटे का काम किया जाता है। यह फेल्ट लद्दाख से आती है।

काश्मीरी व्यापारी योरुपीय बाजार की ओर अधिक ध्यान देते हैं। योरुपीय लोग काश्मीर के बने सामान को बहुत पसंद करते हैं। वैसे काश्मीरी सौदागर अपने सामान बेंचते हुये समस्त भारत में दिखाई पड़ते हैं। वह काश्मीर में भी बरामदों में अपने सामान का संदूक खोल

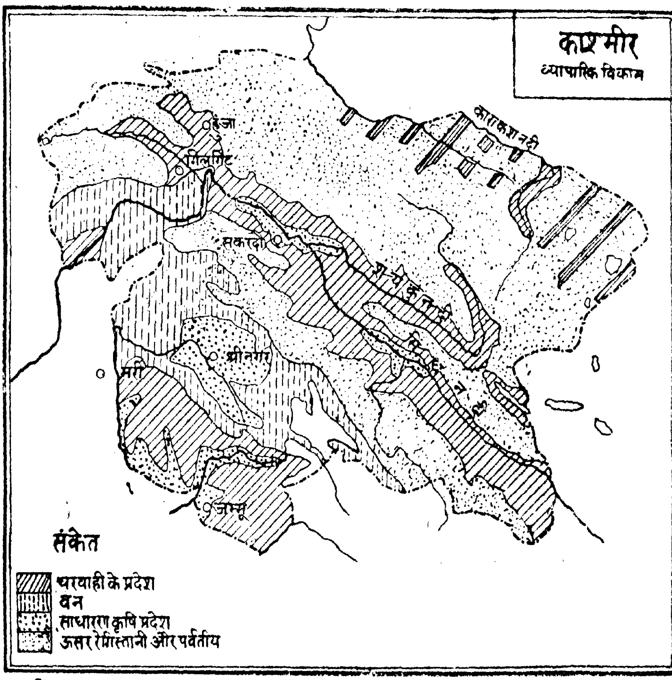


कर सामान बेचते हुये दिखाई पड़ते हैं। लन्दन आदि विदेशी स्थानों में कुछ काश्मीरी सामान बिक जाता है।

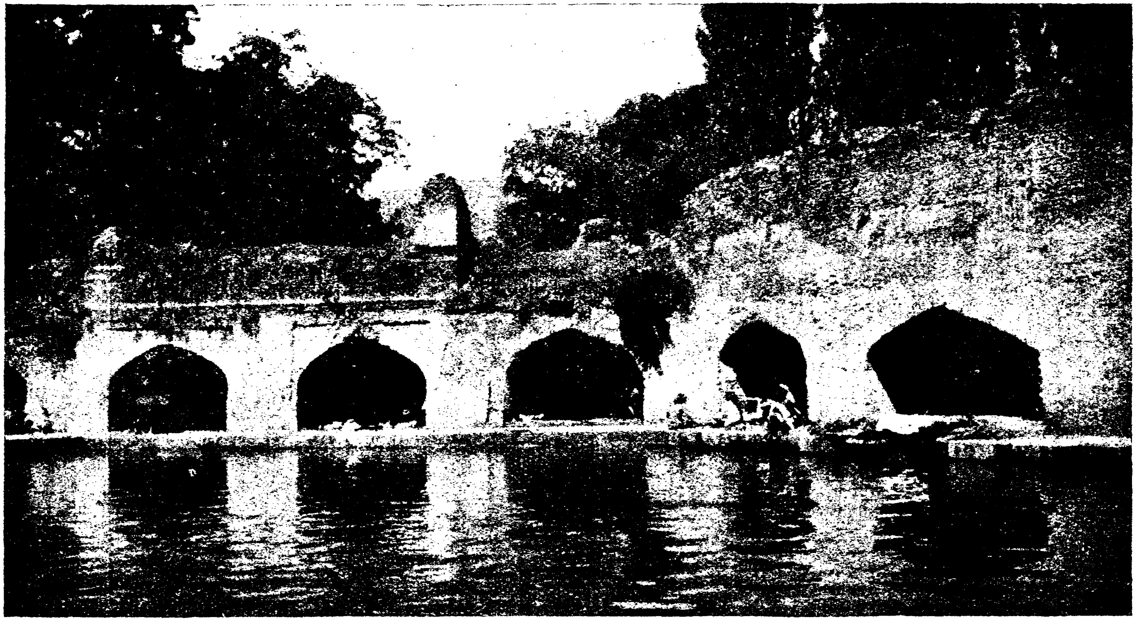
ऊनी पट्टू भी श्रीनगर में बहुत बनाया जाता है। मामूली पट्टू का प्रयोग काश्मीर में होता है और अच्छा पट्टू बाहर भेजा जाता है।

यदि तुम श्रीनगर के किसी बड़े व्यापारी की दूकान पर ऊनी कपड़े तथा रेशम के बने सामान खरीदने जावो तो वह तुम्हें पहले मामूली कपड़े दिखावेगा परन्तु आग्रह करने और मांगने पर वह मामूली कपड़ों के गट्ठर को कोने में फेंक कर सुन्दर बहुमूल्य कपड़ों के गट्ठर को उठावेगा। जिनके ऊपर चांदी तथा सोने का काम रहता इन सुन्दर कपड़ो में एक एक इंच में तीस तीस सीवन की लाइनें होती हैं। नमाज़ पोश या आसनी (पूजा करने के लिये छोटे चौकोर कामदार कपड़े) बड़े ही सुन्दर होते हैं। उनका मूल्य ७५० रुपये तक होता है जिन्हें राजा या नवाब ही खरीद सकते हैं। दूकानदार बहुमूल्य राजा महाराजाओं के वस्त्र तुम्हारे सामने रख देगा जिन्हें देख कर तुम्हारा मन लालायित हो जावेगा। यदि तुम कुछ भी खरीदो तो भी दूकानदार बुरा न

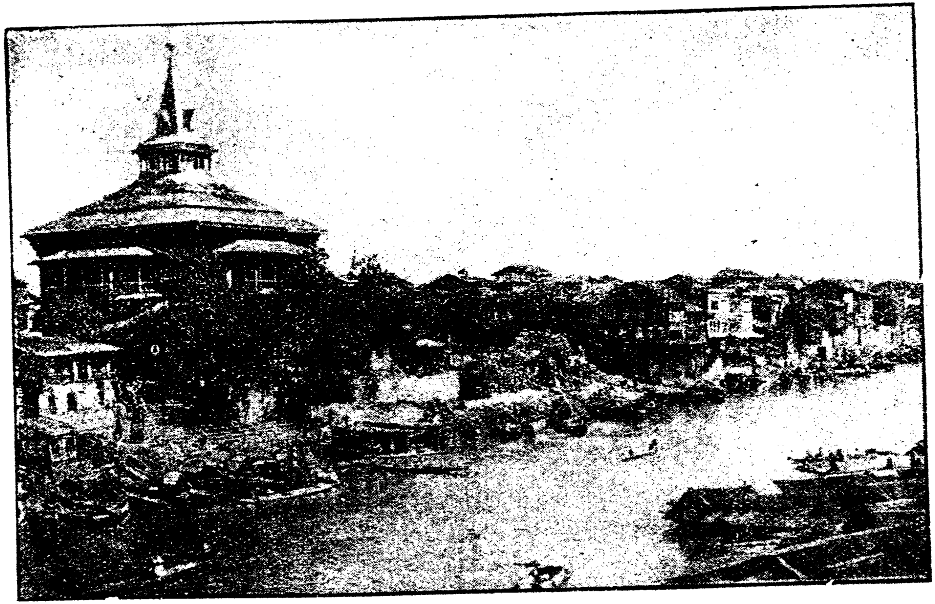
मानेगा और तुम्हें सीढ़ी के नीचे तक पहुंचा कर अभिवादन करेगा।



श्रीनगर में लकड़ी का काम भी अच्छा होता है। लकड़ी पर नक्काशी का काम सुन्दर बनाया जाता है।



झेलम नदी का उद्गम स्थान।



झेलम नदी और श्री नगर

कपड़ों पर कच्चे रंग की रँगाई का काम भी खूब होता है। ताँबा चाँदी और सोने के काम अच्छे बनाये जाते हैं।

शिल्पकारी का काम श्रीनगर में बड़ा ही सुन्दर बनाया जाता है। वहाँ पत्थर की मुहरें बड़ी सुन्दर तयार की जाती हैं। पत्थर के सुन्दर आभूषण तयार किये जाते हैं। पत्थर को वहां के कारीगर बड़ी सफाई और सुन्दरता के साथ लगाना जानते हैं। श्रीनगर के समीपवर्ती पहाड़ों पर कुछ अच्छे पत्थर पाये जाते हैं। कहा जाता है कि हरमुख पर्वत पर पन्ना पाया जाता है। लदाख और यारकंद से सुन्दर बहुमूल्य पत्थर श्रीगनर को आता है। चांदी और पीतल के ऊपर पीरोज़ा पत्थर को लगाकर सुन्दर सामान बनाया जाता है। श्रीनगर में जड़ाऊ काम बहुत अच्छा तयार किया जाता है।

श्रीनगर में सूती कपड़े पर गोटे पट्टे का जो काम होता है वह बड़ा ही सुन्दर होता है। बहुमूल्य तथा सस्ते सभी प्रकार के बेलबूटे बनाये जाते हैं।

श्रीनगर में कालीन तथा दरी बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं कारखानों में काम करने वाले लकड़ी के

छायादार स्थानों में काम करते हैं। जिस करघे पर दरी अथवा कम्बल बनाया जाता है इसके सामने ६ से १० तक लड़के बैठते हैं। उनके पास ही उनका संचालक रहता है जो "तीन लाल, चार नीले, पांच श्वेत, बारह लाल, सात नीले, आठ हरे" आदि के शब्द उच्चारण करता रहता है बच्चे उसी के कथनानुसार उतने ही धागे प्रत्येक रंग के क्रमानुसार लगाते जाते हैं। मामूली दरी में एक इंच में १० सीवन होती हैं।

रंगीला नमूना तयार करने के लिये अलग लोग रहते हैं जो चतुर अनुभवी बड़े बूढ़े होते हैं। नमूना तयार करने वाला अपने समीप एक लिखने वाले को बैठा लेता है और उसे दस लाल, ५ काला, ७ सफेद, ६ हरा, ७ नीला आदि का इमला लिखाता जाता है।

श्रीनगर में रेशम का रोज़गार बहुत है रेशमी सामान तयार करने के लिये वहां पर एक बड़ा कारखाना है। रेशम के व्यवसाय से राज्य को बड़ी आय होती है। श्रीनगर के समीपवर्ती गाँवों में रेशम के कीड़े पाले जाते हैं जिन्हें शहतूत की पत्ती खिलाई जाती है रेशम के कीड़े बड़े तथा मोटे होने पर कारखाने के अन्दर आते हैं कार-

खाने बड़े बड़े मकान रहते हैं। कलों को चलाने के लिये बड़े बड़े इंजिन लगे हुये हैं। वहाँ पर हज़ारों लोग काम कर रहे हैं। वहाँ पर रेशम जिस तरह तयार होता है उसके भिन्न भिन्न विवरण भली भाँति देखे जा सकते हैं। रेशम तयार करने के पश्चात् एक बड़े कमरे में आता और वहां से लन्दन आदि संसार के भिन्न २ बड़े स्थानों में भेजा जाता है।

श्रीनगर में कुछ अँग्रेज़ भी बसे हैं वहां पर रेज़ीडेन्सी बनी हुई है जो सरकारी दूत के अधिकार में है। वहां पर अँग्रेज़ बस्ती के अन्दर दो गिरजे, एक क्लब, एक पुस्तकालय, एक दौड़ का स्थान, क्रीकेट और पोलो के मैदान और होटल हैं। दो अस्पताल राज्य की ओर से और एक प्रजा का है इन औषधालयों में लगभग ३० हज़ार मरीज़ प्रति वर्ष चंगे किये जाते हैं। औषधालयों के मकान साफ और हवादार हैं। डाक्टर लोग देहात का भी भ्रमण करते रहते हैं और जो लोग बीमार होते हैं उनकी वह दवा देख भाल करते हैं।

काश्मीर के देहाती बाज़ार भारत वर्ष के दूसरे बाज़ारों से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। वहां पर प्रत्येक

भांति का सामान बिकने के लिये आता है। चाय बना कर पिलाने वाले लोग अपनी दूकान के लिये तयार रहते हैं।

श्रीनगर एक प्रसिद्ध कला का नगर है। श्रीनगर में बहुत से पवित्र तालाब हैं जिनमें मछलियां है लोगों को उन तालाबों में मछलियां मारने की आज्ञा नहीं है।



निवासी

आधुनिक काश्मीर और उसके निवासी

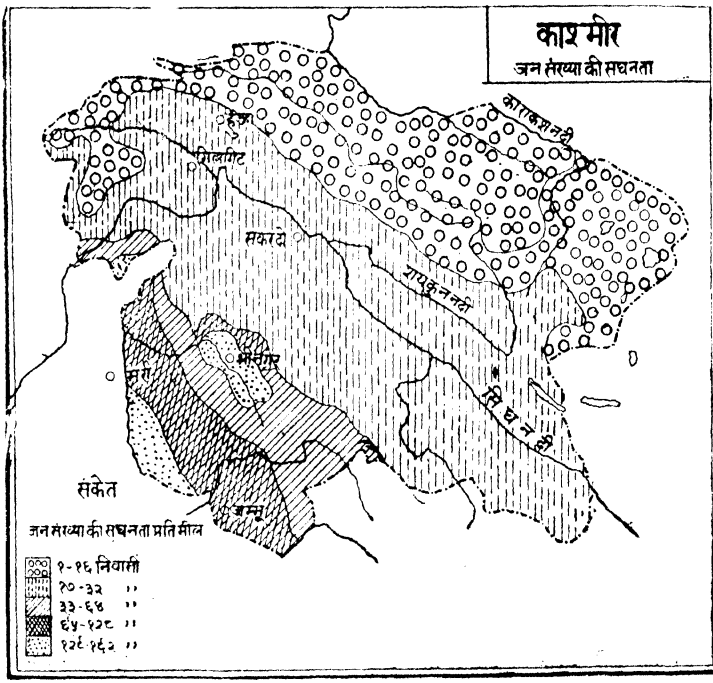
काश्मीर का आधुनिक इतिहास उस समय से आरम्भ होता है जब से कि अँग्रेज़ी राज्य पञ्जाब में स्थापित हुआ।

गुलाबसिंह डोंगरा देश का एक पहाड़ी शासक है। वह जम्मू में पैदा हुआ था। वह तीन भाई थे जिन्होंने लद्दाख और बल्तिस्तान ज़िलों की विजय की थी। सिक्खों की लड़ाई में गुलाबसिंह ने अँग्रेज़ों का साथ दिया जिससे उसे और भाइयों से अधिक भूमि प्राप्त हुई गुलाबसिंह को कुछ थोड़े धन के बदले में बहुमूल्य काश्मीर का राज्य दिया गया था।

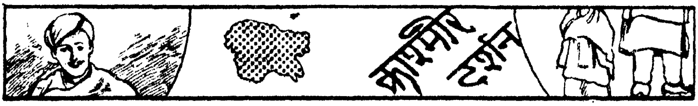
गुलाबसिंह काश्मीर के नये शासक बने थे उनके पश्चात् उनका पुत्र गद्दी पर बैठा वह बड़ा ही अच्छा शासक था। यदि उसके प्रधान अफसर उसी की भांति होते तो काश्मीर का शासन बड़ा ही सुन्दर होता परन्तु वह कुछ सख्त थे जिसमें प्रजा की दशा बड़ी शोचनीय हो गई थी।

१८७७ ई० का वर्ष काश्मीर के लिये बड़ा कष्टकारक सिद्ध हुआ। उस साल कर का बोझ बहुत था

साथ ही साथ फसल इतनी खराब थी कि लोगों ने अपनी तयार फसल को खेतों में बिना कटे ही छोड़ दिया



था। गाँव के गाँव खाली हो गये। व्यापार घट गया और भूखों मरने के कारण काश्मीर की जन संख्या घट



गई। अंतिम महाराज्य के समय में काश्मीर के भाग्य लौटे थे।

आजकल आधुनिक शिक्षा और व्यापार का प्रचार काश्मीर में दिन प्रति दिन बढ़ रहा है जिससे वह उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।

काश्मीर में जो यात्री ग्रीष्म ऋतु में भ्रमण के लिये जाते हैं उनसे बड़ा लाभ है वह वहाँ खूब खर्च करते हैं और वहां के व्यापार को उन्नति शील बनाते हैं। काश्मीरी व्यापारी लोग साहब लोगों के साथ बड़े शिष्टाचार तथा मेहरबानी के साथ मिलते हैं और बिना जाने ही उनके पसंद करने पर बिना मूल्य चुकाये ही उनके पास सामान भेज देते हैं।

काश्मीर के श्रीमान् महाराज बड़े उदार उन्नत और सुशील हैं। महाराज ने श्रीनगर में और उसके आस पास लोगों को पड़ाव डालने और मकान बनाने की आज्ञा दे रक्खी है। घाटी और गुलमर्ग में भी लोग बसे हैं। झेलम नदी के दोनों तटों पर बस्ती बसी हुई है। समस्त काश्मीर की जन-संख्या लगभग ३६ लाख है।

श्रीनगर का दृश्य बड़ा ही सुहावना है। वहां पर

झेलम नदी में ७ पुल बने हैं। नदी में नावें प्रत्येक समय चला करती हैं। नगर से स्टीमर चला करते हैं। वेनिस की भांति श्रीनगर में पानी ही सड़कों का काम देता है। घर लकड़ी और कच्ची ईंट के बने हैं। वह देखने में बड़े हिलने वाले प्रतीत होते हैं परन्तु भूकम्प का उन पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है।

प्राचीन नगर का स्थान आधुनिक नगर से कहीं अच्छा और स्वास्थप्रद था लगातार नदी के बहाव तथा और निचले दलदली तट के कारण श्रीनगर साल के कुछ महीनों में बड़ा ही अस्वस्थ हो जाता है परन्तु नदी के ऊपर नगर बनाने का प्रलोभन बड़ा भारी होता है। नदी पर वाले नगर को बड़ी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं और उसकी सुन्दरता भी बढ़ जाती है। इसी कारण श्रीनगर नदी के ऊपर बसाया गया है।

श्रीनगर में हिन्दू मन्दिर तथा मुसलमान मसजिदें हैं। बड़े २ विशाल भवन तथा शानदार दूकाने हैं। घरों के द्वारों तथा खिड़कियों की सुन्दरता भी अपूर्व है। बसंत ऋतु में अंगूर तथा गुल्लाला अपने रंगों से नगर को और भी अधिक सुशोभित बना देते हैं। स्त्रियां नदियों

के किनारे सुन्दर रंगीले वस्त्र धारण किये नहाती तथा सफाई करती रहती हैं जिससे प्राकृतिक तथा मानवी सुन्दरता में और भी अधिक बृद्धि हो जाती है।

तख्ते सुलेमान से श्रीनगर और उसके चारों ओर का जो दृश्य दिखाई पड़ता है। वह अद्वितीय होता है। श्रीनगर वहां से अपने भूरे रंग की छतों के कारण एक बड़ी चींटियों की पहाड़ी की भांति प्रतीत होता है। चरागाह तथा धान के खेत बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं। उनके मध्य होकर पानी की धाराएँ तथा घुमावदार नदी है। चिनार बृक्ष के कुञ्ज लम्बी हरी रेखा में लगे हैं और अधिक दूरी पर झील दिखाई पड़ती है जिसके भीतर पहाड़ी का दृश्य दिखाई पड़ता है।

काश्मीर के सभी निवासी एक ही धर्म के नहीं हैं। काश्मीर के अधिकांश निवासी मुसलमान हैं।

सिख और डोगरा लोग वहां की शासक जातियां हैं जो जम्मू तथा उसके आस पास निवास करते हैं। वहाँ के पंडित या आदि हिंद लोग गोरे रंग के होते हैं। वह आकार में आर्य लोगों की भांति होते हैं। पंडित लोग नगरों में अधिकतर रहते हैं और मुन्शीगीरी (मुनीमी)

का काम करते हैं। उनकी स्त्रियां सुन्दर लाल, नीले और हरे वस्त्र धारण करती हैं। मुसलमान स्त्रियाँ ढीला ढाला लम्बा भूरा झूला पहनती हैं।

किसान तथा देहाती अधिकतर मुसलमान हैं। उनमें कुछ व्यापारी हैं। सभी जाति वाले स्वतन्त्रता-पूर्वक अपने धर्मानुसार चलने की स्वतन्त्रता रखते हैं। काश्मीरी लोग बड़े मजबूत होते हैं और भारी बोझ उठा सकते हैं।

शिक्षित काश्मीरी बड़े सभ्य होते हैं वह प्रत्येक मार्ग में उन्नति शील दिखाई पड़ते हैं। कुछ मुल्ला बड़े शिक्षित तथा बुद्धिमान हैं।

नाव चलाने वालों की जाति अलग होती है। उनकी संख्या काश्मीर में ३४००० है। उन्हें हंगिस कहते हैं वह घमंड के साथ बतलाते हैं कि वह नूह के कुटुम्ब से हैं। मल्लाहों की जाति के अन्दर भी मतभेद पाया जाता है। तैरते हुये खेतों के कृषक, झीलों तथा नदियों की उपज के ढोने वाले तथा सिंघाड़े की खेती करने वाले मल्लाह दूसरे मल्लाहों से उच्च श्रेणी के माने जाते हैं। सवारी ढोने वाली नावों के मल्लाह और भी नीच



श्रेणी के हैं और मछली मारने वाले कछुए तो निकृष्ट श्रेणी के माने जाते हैं।

काश्मीरी लोगों में नट (घूमने वाली जाति) लोग भी पाये जाते हैं जो चमड़े का काम करते हैं। वह मृतक पशु के शरीर से चमड़ा उतारते तथा उसे काम के योग्य तयार करते हैं। गल्ला चराने वाले जहाँ कहीं चरागाह अच्छा होता है वहीं पर अपने गल्लों के साथ रहता है। वह अपना दूध, मक्खन पनीर और ऊन दूसरों के हाथ बेंचते हैं।

काश्मीरी बच्चे नाव चलाने के बड़े शौकीन होते हैं वह खेलने के भी शौकीन होते हैं। श्रीनगर में बच्चे अँग्रेजी खेल क्रीकट आदि भी खेलते हैं। छोटी लड़कियाँ अपनी गुड़ियों को प्यार करती हैं और उनके लिये छोटी पालकी रखती हैं। वह बालिकायें अपने सादे जीवन के खेल उन्हीं गुड़ियों के साथ खेलती हैं।

काश्मीरी लोग नाटक का खेल पसंद करते हैं। बहुत से स्वांग भरने वाले लोग गांव गाँव घूमते हैं। उनका खेल बहुत अच्छा होता है।

काश्मीरी लोगों में भाट भी पाये जाते हैं भाट लोग

बड़े तथा प्रभाव शाली लोगों की प्रसंशा में कविता बना कर गाया करते हैं प्राचीन काल में यह लोग राजा महा-राजाओं की प्रशंसा घूम घूम कर किया करते थे। काश्मीरी लोग मुख्य अवसर की बाट जोहते रहते हैं जिससे वह शीघ्र ही उन्नति कर सकें।

काश्मीरी लोगों के जन्म व्याह और मृत्यु के समय भांति भांति के रीत रिवाज मनाये जाते हैं। इन रीत रिवाजों में बड़ा धन व्यय होता है।

काश्मीरी स्त्रियां बड़ी सुयोग्य गृहणी होती हैं। वह अपने बड़े परिवार तथा पति की बड़ी भक्त होती हैं।

काश्मीर की कुछ स्त्रियां (मुख्यतः मल्लाह) बड़ी लड़ाकू होती हैं। वह बहुधा अपने बोटों (नावों) पर अपने पतियों के साथ दिन भर लड़ती झगड़ती रहती है यदि सूर्यास्त होने पर भी उनका झगड़ा समाप्त नहीं होता है तो वह एक टोकरी औंधा कर अपनी लड़ाई समाप्त कर देती हैं। टोकरी औंधा करने का मतलब यह होता है कि समय आने पर वह फिर अपना झगड़ा आरम्भ करेंगे। काश्मीरी लोगों के मध्य चाची, मौसी मामी और फूफी की महिमा बड़ी मानी जाती है।

बमबस लोग झेलम नदी के दाहिने किनारे पर बारामूला और मुज़फ्फ़राबाद के मध्य रहते हैं।

खखस और हात माल्स जातियां झेलम नदी के बाम तट पर बारामूला और कोहला के मध्य निवास करती हैं। यह जातियां खाखू और हातू दो राजपूतों की सन्तान हैं जो मुसलमान हो गये थे।

किसी समय में यह जातियां काश्मीर को घाटी में आईं और उन्होंने घाटी को तबाह कर डाला था। काश्मीर निवासी इन जातियों से इतना भयभीत हो गये थे कि अब भी काश्मीरी स्त्रियां जब अपने बच्चों को डराना चाहती हैं तो "खूख आव" (खूख आया है) कह कर भय दिलाती हैं।

प्राचीन स्मारक तथा मन्दिर

काश्मीर में प्राचीन काल के बने हुये बहुत से मन्दिर तथा स्मारक हैं। काश्मीर की जलवायु ऐसी है कि वह स्मारकों को स्वयम् खराब करती रहती है फिर सिकन्दर तथा इकोनोक्लास्ट आदि मुसलमान राजाओं ने बहुत से मन्दिरों को तोड़ कर नष्ट कर दिया है। बरफ के पड़ने से भी बहुत से स्थान नष्ट हो गये हैं। वर्तमान महाराज ने प्राचीन स्मारकों को बनाये रखने के लिये एक विभाग खोल रक्खा है। जो उसकी मरम्मत की देख भाल करता रहता है। नीचे कुछ प्राचीन स्मारकों का वर्णन किया जा रहा है। जिनके चिन्ह अब भी वर्तमान हैं।

१—बन्दी का मन्दिर

काश्मीर जाते समय यह प्रथम प्राचीन मन्दिर है। यह हरे पत्थर का बना है और कोटाला से ७६ वें मील पर सड़क पर है। यह खराब दशा में हैं। इसके बनवाने वाले तथा समय का ठीक ज्ञान नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि यह बौद्ध मन्दिर है और कुछ का ध्यान

है कि यह प्राचीन हिन्दू मन्दिर है जो काली देवी के लिये ७०० ई० में बनाया गया था।

२—बूनिआर का मन्दिर

यह मन्दिर सड़क पर कोहाला से ८५ वें मील पर स्थित है। यह घाटी में अपनी असली दशा में खड़ा है। कहा जाता है कि यह मन्दिर ५ वीं शताब्दी में भवानी देवी के लिये बनवाया गया था।

३—श्री का लिंग

यह कोहाला से ६४ मील की दूरी पर है और वहां पर एक बारह फुट ऊँचा भारी लिंग है जिसके चारों ओर चित्र बने हैं।

४—फतेहगढ़ का मन्दिर

यह श्री से १½ मील दक्षिण फतेहगढ़ गांव में है। इसके चारों ओर महाराज रणजीत सिंह ने एक किला बनवाया था जिसमें उन्होंने मन्दिर के कुछ पत्थरों का प्रयोग किया था। इसके कुछ पत्थर ११ फुट लम्बे ४ फुट चौड़े और ३ फुट मोटे हैं। मन्दिर बनवाने वाले के नाम का पता नहीं है।

देश दर्शन

५—नारायण फाल

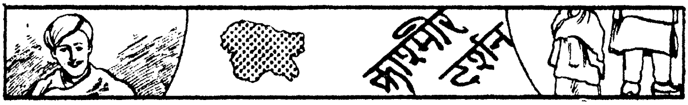
यह झेलम नदी के दाहिने तट पर एक छोटे सरोवर पर स्थित है। यह बारामूला से १½ मील दक्षिण-पश्चिम मुज़फ्फ़राबाद सड़क पर स्थित है।

६—तापर का मन्दिर

बारामूला से १२ मील आगे श्रीनगर की ओर तापर गांव में स्थित है। इस मन्दिर को नरेन्द्रेश्वर कहते हैं। इसे प्रतापदित्य द्वितीय काश्मीर के राजा की स्त्री नरेन्द्र प्रभा ने ६३४ से ६८४ ई० के मध्य बनवाया था। इसे सिकन्दर ने नष्ट किया था।

७—पट्टन का मन्दिर

तापर से ५ मील आगे सड़क पर दो बड़े पत्थरों के मन्दिर हैं। यह शंकर गौरीश और सुगंधेश्वर के मन्दिर हैं। इनको शंकर वर्मन राजा ने २२३ और ९०२ ई० के मध्य बनवाया था। उसकी स्त्री का नाम सुगंध था। यहां पर श्रीनगर से उन्नीसवें मील पर एक शिला स्तूप है।



८—शंकराचार्य या तख्ते सुलेमान

यह तख्ते सुलेमान की पहाड़ी पर है। श्रीनगर जाने वाले यात्रियों का मन इस मन्दिर की ओर अवश्य ही आकर्षित होता है। यह सर्व प्रथम संधिमान द्वारा बनाया गया था। वह काश्मीर का राजा था और २६२६-२५६४ वर्ष ईसा के पूर्व राज्य किया था। महाराज गोपादित्य तथा ललितादित्य ने मन्दिर की मरम्मत बाद में कराई थी। सिकन्दर ने इसे नहीं तोड़वाया क्योंकि सुल्तान मुहम्मद ग़जनी ने वहाँ पर नमाज़ पढ़ी थी। झेलम नदी से पहाड़ी के ऊपर तक गढ़े पत्थर लगाये गये थे उनसे नूरजहाँ ने नगर की पत्थर मसजिद बनवाई थी। बौद्ध लोग अब भी इस मन्दिर को आदर की दृष्टि से देखते हैं और पस-पहाड़ कहते हैं।

९—नर प्रस्थान

यह मन्दिर श्रीनगर में है। इसे नरेन्द्र स्वामी का मन्दिर कहते हैं। इसको लखन नरेन्द्रादित्य ने बनवाया था। यह झेलम के दूसरे और तीसरे पुल के बीच में है।

१०—शाह हमदान मस्जिद

यह तीसरे और चौथे पुल के मध्य स्थित है और लकड़ी की बनी है। यह शाह हमदान नामक फकीर की याद में बनाई गई थी। यह फ़कीर फारस का था। जो सुल्तान कुतुब उद्दीन के समय में काश्मीर में आया था और मुसलमान धर्म की स्थापना की थी। कुतुबउद्दीन ने इस मन्दिर को वहीं के काली के मन्दिर के सामान से बनवाया था। काली के मन्दिर को महाराज प्रवरसेन ने लगभग १०० वर्ष ईसा के पूर्व बनवाया था।

यह मसजिद कई बार जली और फिर बनाई गई अंतिम बार अब्दुल बर्कत खां ने इसे बनवाया तब से यह वैसे ही खड़ी है। हिन्दू लोग झेलम के किनारे काली की पूजा करते हैं और कहते हैं कि उसका सोता मस्जिद के नीचे मन्दिर से है। जब सिक्खों का काश्मीर पर अधिकार हुआ तो सिक्ख सूबेदार हरीसिंह ने मस्जिद को उड़ा देने की आज्ञा दी क्यों कि वहां पर हिन्दू मन्दिर था परन्तु जैसे ही मन्दिर उड़ाया जाने को था वैसे ही मुसलमान लोग पंडित वीर बलदर के पास गये और मस्जिद को बचाने की प्रार्थना की। वीर बलदर की सहायता

से ही सिक्खों को विजय हुई थी। वह सिख गवर्नर के पास गये और कहा कि हिन्दू स्मारक यद्यपि मुसलमानों की देख भाल में है फिर भी वह सुरक्षित है। नष्ट कर देने से उसकी बुरी दशा हो जावेगी और सभी अपवित्र लोग वहां जावेंगे। इसलिये उसे नष्ट न किया जावे। हरीसिंह ने पंडितजी की बात स्वीकार कर ली और उसे गिराने से रोक दिया।

११—पत्थर मस्जिद या नौमस्जिद

यह झेलम के बांएँ तट पर शाह हमदान मस्जिद के ठीक दूसरी ओर है। इसे नूरजहां ने शंकराचार्य की पहाड़ी पर वाली सीढ़ी के पत्थरों से बनवाया था। जब यह तयार हुई थी तो सुन्नी लोगों ने इसे मस्जिद मानने से इन्कार किया था क्योंकि मस्जिद एक शिया स्त्री द्वारा बनवाई गई थी।

१२—महा श्री

महाराज प्रवरसेन द्वितीय का बनवाया हुआ पांच गुम्बद वाला यह मन्दिर झेलम के चौथे पुल के नीचे स्थित है। अब यह मन्दिर कब्रस्तान बना दिया गया

है। सिकन्दर की बीबी उसमें गाड़ी गई थी मन्दिर के बाहर जैनुल अब्दीन की कब्र है। तब से उस स्थान को बादशाह कहते हैं।

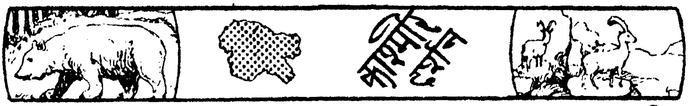
१३—स्कन्द भवन

इसे अब कन्द भवन कहते हैं। यह झेलम के छठवें पुल के समीप है। यह युधिष्ठिर द्वितीय के मन्त्री स्कन्द गुप्त द्वारा बनवाया गया था। यह पीर मुहम्मद बसर की ज़ियारतगाह (स्मारक) के रूप में प्रयोग किया जाता है।

छठवें पुल पर प्रवर से द्वितीय के बनवाये हुये मन्दिर के खँडहर हैं जिसे लौकीश्री कहते हैं। इसी मन्दिर के नाम पर घाट का नाम लोखारीयार है जो लौकी-श्री-यार का अपभ्रंश है।

१४—त्रिभुवन स्वामी

छठवें पुल के नीचे झेलम के बांयें तट पर इस मन्दिर के खँडहर हैं। इसे चन्द्रपिदा राजा ने ६८४-६९३ के मध्य बनवाया था। इसी के समीप ठग बाबसाहब नामक मुसलमान साधु की कब्र है जिससे उस स्थान का नाम ठग बाबा साहब है।



१५—त्तमागौरिश्वर

यह शिव मन्दिर दूध गंगा और झेलम के संगम पर है। इसे त्तमा गुप्त नाम राजा ने दसवीं शताब्दी में बनवाया था इस स्थान पर अभी हाल में मन्दिर की कुछ गढ़ी शिलाएँ तथा शारदा लिपि का शिला लेख पृथ्वी से खोद कर निकाले गये हैं।

१६—दिद्दामठ

दिद्दा त्तमा गुप्त की महारानी थी। उसने दिद्दा मठ बनवाया था जो त्तमा गौरीश्वर मन्दिर के सामने दूसरे तट पर स्थित है। नगर के जिस भाग में यह स्थित है वह अब भी दिद्दामार के नाम से प्रसिद्ध है। यह मठ अब मलिक साहब की समाधि है।

१७—अली मस्जिद

दिद्दा मठ से उत्तर की ओर चलने पर ईदगाह का मैदान पार करना पड़ता है। यह अली मस्जिद की ईदगाह है। इसे १३९७ में जैनुल आब्दीन ने बनवाया था।

१८—विक्रमेश्वर

२ मील आगे चलने पर बिचार नाग के समीप विक्रमेश्वर मन्दिर के खँडहर हैं। इसे क्रियादित्य ने बनवाया था। सिकन्दर ने इस मन्दिर को बर्बाद करके पास ही इसके पत्थर से एक मस्जिद तथा एक मन्दिर बनवाया था।

१९—अमृत भवन

आध मील और आगे पूर्व की ओर चलने पर अमृत भवन मिलता है। यह मन्दिर मेगवाइन की रानी अमृत प्रभा ने बनवाया था। इस भाग को अन्तवाँन भवन कहते हैं।

२०—रागोश्वर

बिचार नाग से २ मील दक्षिण है। इसे राणादित्य राजा ने बनवाया था। यह मदीन साहब की समाधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

२१—विष्णु राना स्वामी

दक्षिण की ओर और अधिक जाने पर एक बड़ा

क़ब्रस्तान है जहाँ पर विष्णु रानास्वामी का मन्दिर था जिसे राणादित्य की रानी ने बनवाया था।

२२—जामा मस्जिद्

लगभग चार मिनट की यात्रा करने के पश्चात् दक्षिण पूर्व की ओर जामा मस्जिद है। इसे सिकन्दर बादशाह ने १४०४ में बनवाया था। यह मस्जिद् एक मन्दिर के सामान से तयार की गई है। मस्जिद् का आँगन २५४×२३४ फुट है। यह मस्जिद् तीन बार अग्नि द्वारा नष्ट हुई और फिर बनाई गई। अंतिम बार १६७४ में औरंगजेब के समय में बनाई गई थी। सिक्खों के समय में यह २३ साल तक बन्द रही और फिर १८४१ में खोली गई।

मस्जिद् के स्थान को बौद्ध लोग पवित्र दृष्टि से देखते हैं। महाराज काश्मीर ने इस मस्जिद् की मरम्मत के लिये १८९३ ई० में १२ हज़ार और १९१२ ई० में ४० हज़ार रुपया दान दिया था।

२३—सद्भाव श्री

मन्दिर से पश्चिम की ओर कुछ मिनट चलनें के

बाद कादी कदल के समीप सद्भाव श्री का मन्दिर है। प्रावरसेन द्वितीय ने बनवाया था। इसके अन्दर सुल्तान कुतुबउद्दीन गाड़ा गया था। यहां पर मीर हाजी मुहम्मद की समाधि मानी जाती है।

२४—हज़रतबाल

दाल झील के तट पर काश्मीर के मुसलमानों की सबसे बड़ी समाधि हजरत बाल है। इस स्थान पर हजरत मुहम्मद के बाल रक्खे हैं जो साल के कुछ मुख्य दिनों में लोगों को दिखाये जाते हैं। बालों को ख्वाज़ा नूरुद्दीन १७०० ई० में ले आये थे।

२५—नसीम बाग़

दाल झील की सीमा पर शाहजहां का बनवाया हुआ नसीम बाग है बाग के अन्दर हजारों चिनार के छायादार वृक्ष हैं। आरम्भ में १२०० वृक्ष लगाये गये थे। नसीम बाग से दाल झील का केन्द्र दिखाई पड़ता है।

२६—शालीमार

दाल झील के उत्तरी-पूर्वी कोने पर शालीमार है।

प्राचीन कहानी के अनुसार प्रवर सेन द्वितीय ने (श्रीनगर के नींव डालने वाले) डाल झील के तट पर एक सुन्दर भवन बनवाया था जिसका नाम उसने शालीमार रक्खा था। शालीमार का अर्थ "प्रेम का स्थान" होता है। समय पाकर वह महल नष्ट हो गया और वहां शालीमार नामक गांव बस गया।

१६१६ ई० में मुग़ल राजा जहांगीर नें गांव में एक बाग लगवाया और उसका नाम 'फरह बख्श' रक्खा। १६३० ई० में शाहजहां की आज्ञा से जफर खां ने इस बाग को और बढ़ाया और उसका नाम 'फैज़बख्श' रक्खा।

शालीमार डाल झील से एक नहर द्वारा मिला है। नहर की लम्बाई लगभग एक मील और चौड़ाई १२ गज है। नहर के दोनों ओर चौड़े हरे मार्ग हैं जिन पर बड़े छायादार वृक्ष हैं। शालीमार बाग की लम्बाई ५६० गज़ और ऊपर की ओर चौड़ाई २६७ गज़ तथा नीचे की ओर २०७ गज है। यह बाग इतना सुन्दर है कि सुन्दरता का वर्णन इस छोटी पुस्तक में होना कठिन है। वह केवल आंखों द्वारा ही देखा जा सकता है।

२७—गुप्त गंगा

शालीमार द्वार से सवा तीन मील दक्षिण गुप्त गंगा है। जहां पर बैसाखी के दिन हर साल मेला लगता है। सरोवर के पीछे एक भीटा है जिसके नीचे के पत्थर नकाशदार हैं। भीटे के स्थान पर एक मन्दिर था जिसे संधिमती अथवा आर्य राज ने ईसा से लगभग ५० वर्ष पूर्व बनवाया था।

२८—निशात बाग़

गुप्त गंगा से कुछ सौ गज की दूरी पर निशात बाग है। इस वाटिका को नूर जहां के भाई आसफजाह ने बनवाया था। निशात बाग का अर्थ हिन्दी में 'आनन्द वाटिका' है। १६३३ ई० में शाहजहा ने इस वाटिका का भ्रमण किया था। इस वाटिका में भी शालीमार नहर से पानी आता है। शाहजहां इस वाटिका को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ था और उसने तीन बार वाटिका की प्रसंशा की जिससे आसफजाह कह दे कि "यह हजूर ही का है" परन्तु आसफजाह ने न कहा इस पर शाहजहां नाराज हो गया और उसने नहर का पानी बन्द करा दिया। आसफ के बाग की दशा बिगड़ती

देख एक दिन बड़ा दुःख हुआ। वह शोक के मारे सो गया। उसके एक नौकर ने उसका यह हाल देख नहर को खोल दिया पानी की आवाज से आसफ जाग उठा। बाद को बादशाह के भय से उसने नहर को फिर बन्द करा दिया परन्तु जब शाहजहां ने सुना तो नौकर को बुलाया। नौकर ने सारा हाल कहा और कहा अपने मालिक के शोक को दूर करने के लिये मैंने नहर का पानी खोला था और उसके बदले कोई भी सज़ा झेलने को तयार हूँ। शाहजहाँ बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उस नौकर को कपड़े आदि इनाम दिये और आसफ जाह को शालीमार नहर से पानी निशात बाग में जाने के लिये सनद दे दिया।

२९—परी महल

यह दाल झील के दक्षिण को ओर पहाड़ी पर है। राजकुमार दाराशिकोह ने इसे अपने गुरु मुल्लाशाह के लिये बनवाया था कि वह तारागणों का अध्ययन करेगा।

३०—पान्द्रेन्थन

यह हिन्दू मन्दिर एक सरोवर के बीच में है, श्रीनगर से लगभग ४ मील की दूरी पर है।

३१—खुनमृह

पान्द्रेथन से पांच मील उत्तर-पूर्व है। यहां पर प्राचीन मन्दिरों के खँडहर हैं।

खेख के छोटे मन्दिर खेख गाँव में हैं। पाम्पुर के मन्दिर खेख से ४ मील दक्षिण-पश्चिम हैं। इसका प्राचीन नाम पद्मपुर है। यहां पर विष्णु पद्म स्वामी का मन्दिर था।

३२—लाधूव का मन्दिर

पाम्पुर से ४ मील दक्षिण-पूर्व स्थित है। यहां सुन्देश्वर नाग पर दो मन्दिर हैं। एक मन्दिर के चारों ओर पानी है।

कुतहार का मन्दिर, सोता अरपथ घाटी में वीर नाग से १० मील पर है। यहाँ पर एक सोता है जिसके चारों ओर महाराज भोज की बनाई हुई चहारदीवारी के खँडहर हैं।

३३—अछबल

पम्पसुथन से ४ मील दक्षिण-पश्चिम है। यहां पर एक सोता है जो काश्मीर में सब से अधिक सुन्दर है।

कहा जाता है कि यह भूमि से निकलने वाला सोता बूँघो नदी का एक भाग है। बूँघी नदी दीवाल गाम के समीप पहाड़ी कंदरा में लुप्त हो जाती है। एक बार कुछ घास के तिनके नदी में लुप्त होने वाले स्थान में डाले गये थे वह अछबल में आ निकले।

३४—मारतंड मन्दिर

अछबल के चार मील उत्तर है। यह प्राचीन मारतण्डेश्वर का मन्दिर रामदेव नामक राजा ने ईसा से ३००० वर्ष पूर्व बनवाया था। यह मन्दिर बड़ा सुन्दर बना था।

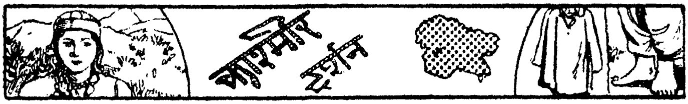
इसके सिवा विवल, पापर, जोवरार अवंतीपुर नर स्थान, बृजविहार, लोक भावना, बीर नाग, मट्टन, बुम्जू मामल, अम्बुरहर के मठ, इलाही बाग, म्यून मन्दिर, नारान नाग, तुलामुला, परस्पुर सून लंक और फिरोजपुर के मन्दिर तथा खँडहर हैं जो देखने योग्य हैं।

काश्मीर जाने का मार्ग

काश्मीर जाने का सब से सरल मार्ग मूरी होकर है। यह मार्ग रावलपिंडी से मूरी होकर है। रावलपिंडी में मोटर, तांगा, टमटम, एक्का आदि सवारियां मिल सकती हैं।

इससे कम चालू मार्ग गुजरात भिम्बेर मार्ग है। यह पीर पञ्चाल घाट होकर ११५०० फुट की ऊँचाई होकर जाता है। गुजरात रेलवे स्टेशन से (नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर) श्रीनगर तक १६५ मील की दूरी है। इस मार्ग का दृश्य बड़ा ही सुहावना है परन्तु बड़ा दुर्गम है। चढ़ाई बहुत पड़ती है। यह वही प्राचीन मार्ग है जिस पर होकर मुग़ल सम्राट जाते थे।

एक मार्ग जम्मू होकर जाता है। यह मार्ग तावी (जम्मू) नार्थ वेस्टर्न रेलवे से आरम्भ होता है और बनिहाल घाट (६२०० फुट ऊँचा) को पार करके वेरीनाग स्थान पर घाटी के भीतर प्रवेश करता है। यह मार्ग सब प्रकार के यात्रियों के लिये नहीं खुला है। योरुपीय लोग महाराज काश्मीर की आज्ञा लेकर इस



मार्ग का प्रयोग करते हैं परन्तु जम्मू और बनिहाल होकर एक नई सड़क बनाई गई है जिसका प्रयोग सभी प्रकार के यात्री कर सकते हैं।

काश्मीर की घाटी में जाने के दूसरे मार्ग (१) पूँछ से बारामूला (२) एबटाबाद से दोमेल होकर है। सभी मार्ग (झेलम घाटी सड़क को छोड़कर) दुर्गम हैं और उनमें ठीक तौर पर डाक बँगले नहीं हैं और सामान बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है।

झेलम घाटी की सड़क

रेलवे यात्रा रावलपिंडी में समाप्त होती है। कलकत्ता से रावलपिंडी मुगल सराय और सहारनपुर होकर १३५५ मील है। मद्रास से दिल्ली ७७५ मील है। दिल्ली से रावलपिंडी ५२९ मील है। करांची से रावल पिंडी ९६४ मील है।

गरमी के दिनों में जब दिन बड़े होते हैं रावलपिंडी से श्री नगर की यात्रा दो दिन में समाप्त की जा सकती है। यह यात्रा भंजीभ्राम के ताँगा द्वारा होगी और १२ घंटे प्रति दिन के हिसाब से चलेगा। मामूली तांगा, एका,

टमटम को पहुंचने में ५ दिन लगते हैं और बैलगाड़ी को १४ दिन लग जाते हैं।

रावलपिंडी से श्रीनगर के मार्ग की दूरी १९६ मील है। कुल १५ चौकियाँ हैं। रावलपिंडी से चलने पर १३ मील की दूरी पर बरकाव की चौकी है। बरकाव से ट्रेट १२ मील, ट्रेट से मूरी ११ मील, मूरी से फगवारी १४ मील, फगवारी से कोहाला लगभग १४ मील, कोहाला से दुलाई १२ मील, दुलाई से दोमेल ६ मील, दोमेल से गड़ही १३ मील, गड़ही से हट्टीअन ११ मील, हट्टीअन से चकोटी ११ मील, चकोटी से ऊरी १३ मील, ऊरी से रामपुर १४ मील, रामपुर से बारामूला १५ मील, बारामूला से पट्टन १६ मील, और पट्टन चौकी से श्रीनगर १८ मील पड़ता है। मार्ग में चौकियों पर डाकखाना तारघर और औषधालय आदि भी हैं।

रावलपिंडी से कोहाला ६४ मील

सड़क लगभग बराबर है परन्तु धूल (गर्द) बहुत है। तेरहवीं मील के समीप एक पहाड़ी नदी पार करनी पड़ती है। चौदहवें मील पर बरकाव डाक बंगला है। बरकाव

के आगे मार्ग में सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं आगे निचली पहाड़ियां हैं जो गरमी के दिनों में गरम रहती हैं और धूल उड़ा करती है। उन्नीसवीं मील पर चत्तर का प्रसिद्ध सुन्दर बाग है। यह स्थान बैलगाड़ी अथवा सुस्त सवारी वाले यात्रियों के ठहरने के लिये बड़ा सुन्दर स्थान है। यहां हिन्दू और मुसलमान दोनों जातियों के लिये प्रत्येक भांति की भोजन को वस्तुयें प्राप्त हो सकती हैं। बाग के पास ही एक शीतल जल का सोता है जहां हिन्दू यात्री स्नान करते हैं। चत्तर बाग के आगे पहाड़ी पर की चढ़ाई आरम्भ हाे जाती है आगे ट्रेट डाक बँगला है ट्रेट के आगे सनी बैंक तथा मूरी हैं जहां का दृश्य रमणीक है। कमीशरियत गुदाम पर सड़क के दो भाग हो जाते हैं एक मूरी को और दूसरी काश्मीर को जाती है। बांयें हाथ वाली सड़क कोहला और काश्मीर को जाती है इन सड़कों के संगम पर सनी बैंक होटल है। मूरी के तांगा ठहरने के स्थान के समीप ही विक्टोरिया चैम्बर्स होटल है।

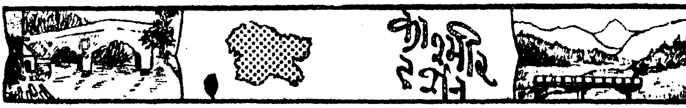
मूरी पञ्जाबी सेना का प्रधान स्थान है। गरमी के दिनों में लोग मूरी में निवास करने के लिये जाते हैं।

मूरी के आगे सड़क पहाड़ से नीचे उतरती है। घाटी के दूसरी ओर पंच राजा की भूमि है।

फगवारी में एक छोटा बाज़ार, कुछ दुकानें और एक धर्मशाला है। बाज़ार में मिठाई, पूड़ी और कच्चा भोजन हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के लिये मिल सकता है। गरमी के दिनों में पानी की बड़ी कमी हो जाती है इसलिये वहां दो आने घड़े पानी मिलता है।

फगवारी से चलकर आगे कोहाला स्थान मिलता है। वहां पर डाक बँगला है। गरमी के दिनों में कोहाला बहुत गरम हो जाता है और वहां पंखे का प्रयोग करना पड़ता है। कोहाला का बाज़ार बड़ा है वहां पर एक बड़ा धर्मशाला है। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के लिये वहां पर प्रत्येक भांति का भोजन मिल सकता है।

कोहाला से कमिया गली को एक पहाड़ी मार्ग जाता है जिसकी यात्रा घोड़े द्वारा की जा सकती है। मार्ग १५ मील लम्बा है। प्रथम पांच मील में नँगी पहाड़ी मिलती है परन्तु अंतिम आठ मील में मार्ग सुन्दर वृक्षों, कुञ्जों और रमणीक दृश्यों के मध्य होकर जाता है। डूंगा गली से दूसरे गलियों को मार्ग जाते हैं।



कोहाला से दुलाई

कोहाला में कर चुकाने तथा पुल पार करने के पश्चात् यात्री महाराज काश्मीर की भूमि में प्रवेश करते हैं। लटकते पुल, बरसल और चत्तर को पार करने के बाद सड़क अगर नदी की ओर नीचे उतरती है। बरसल महाराज काश्मीर के आराम करने के लिये एक शयन-गृह बना है। वहां पर एक हिन्दू भोजनालय है। दुलाई के डाक बंगला बना है। हिन्दू यात्री जो डाक बँगला पर ठहरना नहीं चाहते उन्हें चत्तर में ठहरना चाहिये जहां पर उन्हें प्रत्येक सुविधा प्राप्त हो सकती है।

दुलाई और दोमेल के मध्य नैन सुक पहाड़ी नदी झेलम नदी से मिलती है। दोमेल स्थान पर कृष्ण गङ्गा और झेलम का संगम है। दोमेल में डाक तथा तार घर और औषधालय हैं। दोमेल से डेढ मील के बाद मुज़फ्फराबाद एक बड़ा कस्बा है। वहां पर प्रत्येक भांति का सामान मिल सकता है। पुल पार करने पर एबटाबाद की सड़क मिलती है जो गढ़ी हबीब उल्लाह होकर जाती है।

दो मेल से सड़क दक्षिण-पूर्व को जाती है सड़क के

मोण पर चुङ्गी घर है। जहां पर प्रत्येक यात्री को भ्रमण करने वालों के रजिस्टर में अपना नाम लिखना पड़ता है। महाराज काश्मीर यात्री के निजी सामान की चुङ्गी माफ कर देते हैं। गढ़ी का डाक बँगला एक घास वाले मैदान के समीप सुन्दर स्थान पर स्थित है।

गढ़ी से हट्टियां के मध्य भांति भांति के सुन्दर दृश्य मिलते हैं। हट्टियां से एक मील आगे एक झूले का पुल है जिसे लोग पैदल पार करते हैं। आगे चल कर चिनारी का बाज़ार है। चिनारी में एक सुन्दर चिनार का वृक्ष है। चिनार वृक्ष के समीप ही एक स्वच्छ पहाड़ी नदी बहती है। एक मील और आगे चलने पर जमकूल का प्रपात (झरना) है। वहां पर यात्री को सुन्दर काश्मीर की शीतल हवा मिलती है।

चकोती चौकी पर डाक बँगला है वहां पर एक झूला या रस्सी का पुल है। चकोती में धर्मशाला और कुछ दुकानें हैं।

चकोती से ऊड़ी की सड़क के दोनों ओर बड़े बड़े करारे हैं। बीच में एक पहाड़ी नाला पार करना पड़ता है जिसका दृश्य बड़ा ही मनोहर है। नाले को लोहे के



गाडर से बने हुये पुल द्वारा पार करना पड़ता है। आगे यह सड़क बड़ी भयानक है। बरसात में वर्षा होने पर इस पर चलना बड़ा भयानक है। सड़क पर बड़े बड़े पत्थर के रोड़े आ जाते हैं। सड़क पर पैर फिसलने लगता है।

महोरा स्थान पर एक बड़ा बिजली घर है। बिजली झेलम के पानी से तयार की जाती है। पानी ४०० फुट की ऊँचाई से गिरा कर बिजली तयार की जाती है महोरा से रामपुर तक सड़क सुन्दर पर्वतीय वनैले रमणीक प्रदेश होकर जाती है। रामपुर में एक डाक बँगला है। डाक बँगला से लगा हुआ हिन्दू भोजनालय है जहां हिन्दू यात्री ठहरते हैं। बाज़ार के अन्दर भी कुछ दुकाने हैं।

रामपुर के एक मील आगे बनियर नदी है। वहां पर छोटा बाज़ार है। नोशरा पार करने के पश्चात् सड़क 'कछमा' (छोटा काश्मीर) मैदान होकर जाती है और झेलम नदी के तट होकर बारामूला की घाटी में पहुँचती है।

बारामूला से सड़क द्वारा श्रीनगर

बारामूला एक बड़ा कस्बा है। वहां पर लगभग १००० घर हैं। वहां पर एक डाक बँगला है। डाक बँगला हिन्दू भोजनालय से मिला हुआ है। दुकानों के ऊपर यात्रियों के रहने के लिये स्थान मिलता है। वहां पर सराय धर्मशाला और एक बड़ा बाजार है जहां पर नगर का सभी आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

बारामूला में सड़क बड़ी घुमावदार है। एक मील जाने पर नंगा पर्वत की २६६५६ फुट ऊँची चोटी दिखाई पड़ने लगती है। और आगे जाने पर कसपुरा और दिलना के गांव मिलते हैं। निनगल नदी पर ईंट का बना हुआ पुल है। वलगाम के आगे रिंजी, तरपुर, खामयार और पजहलन के गांव मिलते हैं। पट्टन पहुंचने पर डाक बँगला मिलता है। पट्टन चौकी पर कोई हिन्दू भोजनालय नहीं है परन्तु बाजार में हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को भोजन मिल सकता है।

घाटी में सड़क समतल मैदान होकर जाती है जिसके दोनों ओर छायादार वृक्ष लगे हुये हैं। हरतात का पुल पट्टन से पांच मील आगे है। पुल के आगे चल

कर शादीपुर सड़क का समागम है। उसके पश्चात् सड़क दाहिनी ओर मुड़ती है और मेरगुन्द को जाती है कुछ मील और आगे जाने पर लापुरा स्थान मिलता है जहां से तुंगमर्ग और गुलमर्ग को कच्ची सड़कें जाती हैं। श्रीनगर पहुँचने के पहले चाक की चोकी मिलती है दाहिनी ओर हारी पर्वत का किला दिखाई पड़ता है। यह महादेव पर्वत के ऊपर १३०० फुट की ऊँचाई पर है।

शालेतंग पार करने पर महाराज का कैम्पिंग मैदान मिलता है। नगर के समीप पहुँचने पर परेड के मैदान के चारों ओर सड़क घूमती है और फिर दूध गङ्गा को लकड़ी के पुल द्वारा पार करना पड़ता है।

सुन्दर बाज़ार और अमीर कदल (श्रीनगर के ७ पुलों में से प्रथम पुल) पार करने पर यात्री श्रीनगर के दूसरे बाज़ार में प्रवेश करते हैं। बाज़ार में सुन्दर दूकाने हैं।

बारामूला से नदी द्वारा श्रीनगर

बारामूला में भांति भांति की नावें श्रीनगर के लिये मिलती हैं। बारामूला के आगे नदी का मार्ग बड़ा ही

मनोहर है। वहां का दृश्य दिल पर जादू का काम करता है। चाकलू, लोदर, दिलना और डोरा के सुन्दर गाँवों को पार करने के बाद द्राबगढ़ का बड़ा गाँव मिलता है। द्राबगढ़ में पोहरू और भेलम नदी का संगम है। संगम से चिनार के वृक्षों का एक सुन्दर बाग़ दिखाई पड़ता है। द्राबगढ़ से चार मील आगे नाव द्वारा चलने पर सोपोर मिलता है। सोपोर एक बड़ा क़स्बा है।

सोपोर में नदी बहुत चौड़ी है। सोपोर पुल के समीप ही अस्पताल तथा राज्य की ओर से एक स्कूल है। पुल पर से नदी की ओर और ऊलर भील की ओर का दृश्य बड़ा ही रमणीक होता है। सोपोर में माहशीर मछलियों का शिकार किया जाता है। सोपोर से लोलाब, नागमर्ग और गुल मर्ग की सड़कें जाती हैं।

सोपोर से शादीपुर जाने के लिये दो जलमार्ग हैं। एक मार्ग नूरू नहर होकर है जो १५ मील लम्बा है। इस यात्रा में ८ से १२ घंटे तक लगते हैं।

दूसरा मार्ग में गरमी के दिनों में भयानक तूफ़ान आते हैं। जब भील के अन्दर तूफान होता है और नावों का चलना ख़तरनाक होता है तो नावें तीन चार

बजे सवेरे यात्रा आरम्भ करती हैं। निंगल में आकर नावें रुकती हैं। नावों के छूटने का समय मल्लाहों पर निर्भर रहता है यदि आंधी या तूफान का भय रहता है तो नाव चलाने वाले लोगों को अलग से रखना आवश्यक होता है जिससे ऊलर झील को पार करने की कठिनाई में सुगमता है। यात्रियों को चाहिये कि वह ऊलर झील को दिन में पार करने का प्रयत्न न करें। निंगल से बनयारी तक जाने में नाव को ५ या ६ घंटे लग जाते हैं घर वाली नावों का ७ या आठ घंटे लगते हैं। बनयारी से हज्जन ७ मील है और नाव की यात्रा तीन चार घंटे में समाप्त होती है। हज्जन काफी बड़ा गांव है। हज्जन खाने पीने का सामान मिल सकता है। वसी खाँ पार करने के बाद सुम्बल स्थान मिलता है।

यह एक सुन्दर छोटा स्थान है। नदी के बाएं तट पर छायादार चिनार के वृक्षों की पंक्तियां हैं। सुम्बल में नदी पर एक पुल है। नदी के दाहिने तट पर एक नहर है जिससे यात्री मँसबल की अद्भुत रमणीक झील की यात्रा करते हैं। सुम्बल के आगे शिल्वात और फिर शादीपुर गाँव है।

शादीपुर में झेलम और छोटी सिंध नदियों का संगम है जिसे प्रयागराज कहते हैं। धार्मिक हिन्दू इस स्थान को बहुत पवित्र मानते हैं। यहीं पर सिंध नाला झेलम में गिरता है और नूरू नहर निकल कर बाएं तट हो कर जाती है। नूरू नहर पर बांदीपुर में एक पुल है। झेलम और सिंध के संगम पर एक बड़ा चिनार का वृक्ष है जिसकी जड़ों की रक्षा के लिये वृक्ष के चारों ओर एक पत्थर का चबूतरा बना हुआ है। इसी चबूतरे पर 'शिवलिंगम' है जिसकी हिन्दू लोग उपासना करते हैं। शादीपुर में हर प्रकार की आवश्यक वस्तुएं प्राप्त हो सकती हैं।

शादीपुर से श्रीनगर १४ मील

शादीपुर से नाव द्वारा चलने पर सोनर चिनार स्थान मिलता है उसके बाद मातरू, शालतेंग, गुलमर्ग स्थान है। पूर्ण छावनी नामक स्थान पर काश्मीर का रेज़ीडेंट महाराज काश्मीर से मिलता है जब वह अपने जाड़े की राजधानी जम्मू को जाते हैं। यहाँ से श्रीनगर का पहला या सातवाँ पुल २ मील है।

सातों पुलों के नीचे नदी का दृश्य बड़ा ही सुन्दर

है। सातों पुल नगर को सात भाग में बांट देते हैं। महाराज रणबीरगंज चौथे पुल के नीचे है शेख़ बाग़, राम मुंशी बाग, चिनार बाग, मुंशी बाग, सोनवर बाग आदि कैम्पिग मैदान हैं। इनमें किसी भी स्थान पर यात्री अपनी नाव ठहरा सकते हैं।

हैवेलियां एबटाबाद

मार्ग का प्रयोग श्रीनगर जाने के लिये उस समय किया जाता है जब कि मरी की पहाड़ियों पर बरफ़ जम जाती है।

जम्मू-बानाहल मार्ग

वज़ीराबाद स्यालको ब्रांच लाईन का तावी अंतिम स्टेशन है। यह तावी नदी के आगे जम्मू से दो मील की दूरी पर है। जम्मू में एक बड़ा सुन्दर डाक बंगला है। जम्मू महाराज काश्मीर की शीतकाल की राजधानी है। इस मार्ग के लिये महाराज काश्मीर से आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती है।

जम्मू से चलने पर श्रीनगर पहुंचने के लिये मार्ग में नगरोत (१२०० फुट) फाजर (१८०० फुट) उधमपुर

(२८०० फुट), धरम थाल (४८०० फुट) बतोती (५,५००फुट) रामबाण (२५३५फुट) रामसू (४०७०फुट) बानाहल या देवगुल (५५८० फुट ऊँचा) बेरीनाग (६२०० फुट) खतबल या इस्लामाबाद (५४०० फुट) अवन्तीपुर आदि स्थान मिलते हैं।

इस मार्ग के प्रयोग के लिये जम्मू के गवर्नर या जम्मू के तहसीलदार की आज्ञा लेनी पड़ती है।

पीर पंचाल या पूँच मार्ग

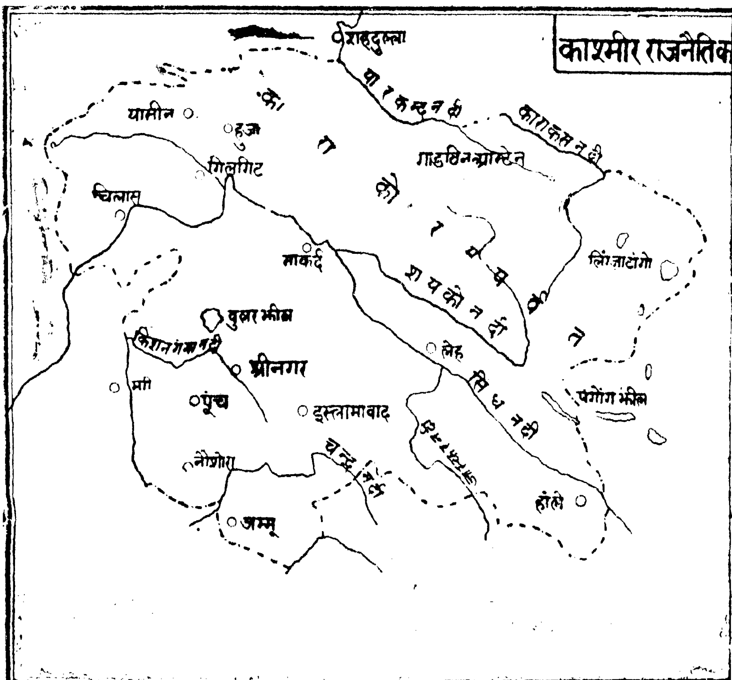
भीमबीर से सैदाबाद, नौशेरा चँगस सराय, राजोरी थाना मंडी, बहराम गला, पोशिन, अल्लियाबाद सराय हीरपुर, शुपियन, राम्मू आदि स्थान होते हुये मार्ग श्रीनगर जाता है।

भीमबीर मार्ग नवम्बर से मई मास के आरम्भ तक चलने योग्य नहीं रहता है। गुजरात नार्थ वेस्टर्न रेलवे का स्टेशन है जो वजीराबाद के आगे है।

पूँच मार्ग

भीमबीर से सैदाबाद, नौशेरा, चँगस सराय, राजोरी गुजरात, थानामन्डी, सूरन, पूँच, कहुता, अलीआबाद

हैदराबाद होकर अरी जाते हैं। वहां मार्ग झेलम घाटी के मार्ग से मिल जाता है। अरी से रामपुर, बारामूला और पट्टन होकर श्रीनगर जाते हैं।



देश दर्शन

काश्मीर की अद्भुत वस्तुएँ

काश्मीर में बहुत से स्थान तथा वस्तुएँ ऐसी हैं जो बड़ी अद्भुत हैं उनमें से कुछ का वर्णन निम्नांकित है।

१—अमरनाथ

पूर्वी पर्वतों में श्री नगर के आठ चौकी के पश्चात् एक गुफा है। जिसमें एक हिम का लिंग स्वयं बनता है जो चन्द्रमा के साथ ही साथ प्रत्येक मास बढ़ता तथा घटता रहता है। श्रावण की पूर्णिमा को वहां पर हर साल एक बड़ा मेला लगता है जिसमें काश्मीर तथा समस्त भारतवर्ष से लोग आकर शामिल होते हैं। कहा जाता है कि अमरनाथ के आगे और बांदीपुरा के ऊपर पहाड़ पर दो गुफायें और हैं जहां पर भी हिम के लिंग बनते हैं।

२—लारमे तुलामूल

लार गांव में एक सोता है जिसका पानी कभी तो गाढ़ा लाल और कभी हरा रहता है। हिन्दू लोग वहां पर पूजा करते हैं। शुक्ल पक्ष के अष्टमी और पूर्णिमा को



प्रत्येक मास यहां एक बड़ा मेला लगता है। मेले में जमघट खास कर ज्येष्ठ मास में होता है।

३—उत्तर मछनीपुर

उत्तर मछनीपुर में ताकर स्थान पर एक सोता है जिसका पानी भी तुलामूल की भांति रंग बदलता रहता है।

४–त्रिसंध्या

यह सोता ब्रांग में दीवलगाम में है। बैसाख और ज्येष्ठ मास छोड़ कर साल भर यह सोता सूखा रहता है। आरम्भ में कुछ दिनों तक तो पानी बराबर बहता रहता है उसके बाद फिर किसी घड़ी पानी बहता है और किसी घड़ी सूख जाता है। यह पानी बहने का क्रम दिन में २४ घंटे के अन्दर कई बार होता है।

५—रुद्रसंध्या

त्रिसंध्या की भांति यह सोता भी साल भर सूखा रहता है और बैसाख ज्येष्ठ में पानी आता है। पहले कुछ दिनों तक लगातार पानी बहता है और फिर

त्रिसंध्या की भांति २४ घन्टे में कई बार पानी बहता तथा कई बार सोते का पानी सोखता है।

६—वासुकनाग

रुद्र संध्या के ६ मील पश्चिम यह एक बड़ा सोता है। यह जाड़े के ६ महीनों में बिलकुल सूखा रहता है परन्तु गरमी के ६ महीनों में इसमें खूब पानी रहता है। जिसमें एक बड़े प्रदेश की सिंचाई होती है।

७—पवन संध्या

वीरनाग ५ मील पूर्व और पवन संध्या नामक सोता है। यह इस प्रकार घटता बढ़ता रहता है मानो यह पवन (हवा) पान करके ही जीवित है। इसी से इसका नाम पवन संध्या है।

८—सप्त ऋषि

वीर नाग के समीप विथावतूर में सात सोते हैं। जो वासुक नाग की भांति ६ महीने तक जाड़े में सूखे रहते हैं और गरमी के दिनों में बहा करते हैं।

६—उत्तर मछीपुरा में हलमतपुर स्थान पर पांच



सोते हैं। इन सोतों में से एक में एक पत्थर का लिंग है। यह लिंग स्वयम् घूमता है और एक महीने में एक कोण से दूसरे कोण तक घूम जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि जिस सोते में यह लिंग है उसके धरातल में बालू है इस कारण सोते का धरातल के बहने से ऊँचा नीचा होता रहता है और इसी कारण लिंग घूमता है।

१०—शुपयान में दुब्जान स्थान पर तपदान नामक सोता है जिसका पानी सदैव उष्ण रहता है। इसी प्रकार का एक और सोता अनन्त नाग से ६८ मील की दूरी पर मरगान घाट पार करने पर मिलता है।

११—ब्राँग में गगर क्षुद पर लारिकपुर के ऊपर सीता कुण्ड नामक एक सोता है। इस सोते के कुछ मछलियों के केवल एक ही आँख है।

१२—लार की ऊँची पहाड़ी को हरमुख कहते हैं। कहा जाता है कि इस पहाड़ी से दिखलाई पड़ने वाला साँप काटता नहीं है।

१३—ज्ञानेश्वर मंदिर

बाँदीपुर के १२ मील पूर्व सिमथान गाँव के

ऊपर पहाड़ी गुफा में एक मन्दिर है। जिसमें पत्थर के बने गाय के थन छत पर है। मन्दिर में एक लिंग है। गाय के थनों से पानी टपकता रहता है। मन्दिर तक जाने के लिये एक गज़ चौड़ा संकरा मार्ग है।

१४—बुम्ज़ू में मत्तन के उत्तर एक पहाड़ी गुफा है। इस गुफा की लम्बाई आज तक कोई मालूम नहीं कर सका है। इसी भाँति की एक दूसरी गुफा बीरू में है जिसमें प्रसिद्ध तपस्वी तथा दार्शनिक अभिनवगुप्त अपने १८०० चेलों के साथ प्रवेश किया था और अब तक नहीं लौटा।

१५—स्वयम्भु या सुयाम

यह मछीपुरा में निचीं होम ग्राम के आध मील दक्षिण-पश्चिम है। इस स्थान पर ३० साल में एक बार एक पूरे साल के लिए पृथ्वी गरम हो जाती है। उस समय हिन्दू लोग वहां तीर्थ यात्रा को जाते हैं। हिन्दू लोग बर्तन में चावल और पानी रख कर गाड़ देते हैं। इस प्रकार चावल को वह अपने पित्रों के नाम अर्पण करते हैं। वहाँ पर यदि एक फुट ज़मीन खोद कर घी और

शक्कर डाली जाती है तो अग्नि की लपटें उठने लगती हैं।

१६—प्रयाग में झेलम के संगम पर एक छोटा सा द्वीप है। इस द्वीप में एक छोटा चिनार का वृक्ष है जो न तो बढ़ता है। न मोटा होता है और न छोटा या पतला होता है। वह प्राचीन काल से आज तक वैसी है।

१७—अयान या ऊलर गांव में (श्रीनगर से लगभग १२ मील दक्षिण) एक झरना है जिसमें स्नान करने से खाज आदि चर्म रोग अच्छे हो जाते हैं। अनन्त नाग और सदर कुतबल में भी ऐसे ही सोते हैं।

१८—कोटहार में सरबल पर्वत के ऊपर एक झरना है जिसे क्षुहर नाग कहते हैं। इसका पानी बड़े बेग के साथ कुम्हार के चाक की भांति चक्कर खाता हुआ निकलता है।

देश दर्शन

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लावेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाइदेश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन और काश्मीर आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। काग़ज, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ट की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भजने की कृपा करेंगे।